हिन्दू चेतना

(पाक्षिक)

E-mail:hinduchetna.patrika@gmail.com

युगाब्द 5118 | हिन्दवः सोदरा सर्वे, न हिन्दूः पतितो भवेत्। मम दीक्षा हिन्दुरक्षा मम मंत्रः समानता।। | 2073 वि.सं.

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
श्रीमद्भगवद्गीता	3
दिन दर्शिका	4
गुरु गोविंद सिंह जयंती	5
'तलाक' बंदी	5
महान प्रेरणा स्रोत – स्वामी विवेकानंद	6
मकर संक्रांति	9
जम्मू में रोहिंग्या मुस्लिम घुसपैठ	10
शोर में खामोश संसद, दिखावा लोकतंत्र का	11
'अफजल' का 'गुरु' जीवित है...	13
भारत अखण्ड होने की ओर अग्रसर –प्रेम	14
विश्व हिन्दू परिषद् के उपाध्यक्ष का 76 में वर्ष में प्रवेश	15
बजरंगदल ने राज्य सरकार का पुतला फूंका	15
तर्कहीन राजनीति का परिचय देते पक्ष और विपक्ष	16
सांस्कृतिक अवमूल्यन	18
गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्र. नितिन आर्य को स्वर्ण	18
अभी नहीं तो कभी नहीं समय बहता जा रहा है, युद्ध ही कल्याण	19
बजरंगियों ने फूंका डॉ. फारूक अब्दुल्ला का पुतला	20
सांप्रदायिक निर्णय के बाद भी कांग्रेस सेक्युलर!	21
सेवा कार्य	22
बजरंगदल ने मनाया शौर्य दिवस	23
कहां नहीं है धुंध, कोहरा, स्मॉग	24
वंदे मातरम् का गायक हूँ	26
बांग्लादेश अब नहीं रहेगा इस्लामिक राष्ट्र	26

अथदशमोऽध्यायः

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् ।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः ।।३५।।

गायन की जाने वाली श्रुतियों में मैं बृहत्साम हूँ और वैदिक छन्दों में गायत्री छन्द हूँ। 12 महीनों में मार्गशीर्ष का महीना और 6 ऋतुओं में वसन्त ऋतु मैं हूँ।

सामवेद के ही अंतर्गत–सब सामों में मुख्य है बृहत्
बृहत्साम नामक जो गीति है–वह तो मेरी ही स्तुति है

दोहा–इन्द्रदेव को मानकर, मेरा एक स्वरूप ।
बृहत्साम द्वारा स्तुति, है अत्यन्त अनूप ।।
सामवेद में श्रेष्ठतम, बृहत्साम ही गीति ।
इस कारण मैं मानता, अपनी इसे विभूति ।।

जितनी छन्दोबद्ध ऋचायें-वेदों में वेदज्ञ गिनायें
उनमें सर्वश्रेष्ठ गायत्री–वेदों की यह ही जनयित्री
अति महिमा वर्णित शास्त्रों में–मैं ही गायत्री छन्दों में
मासों में अगहन हूँ मैं ही–अधिक अन्न उत्पति इसमें ही
नये अन्न से यज्ञ इसी में–उत्तम व्रत–फल आदि इसी में
ऋतुओं में वसन्त मैं सुरभित–चहुँ दिशि पुष्प लोग आनन्दित

द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ।
जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम्।।३६।।

छल करने वालों में जूआ और तेजसिवयों में तेज मैं हूँ। मैं जीतने वालों की विजय हूँ। निश्चय करने वालों का निश्चय और सात्विक मनुष्यों का सात्विक भाव मैं हूँ।

छल वंचना व कपट क्रियायें–द्यूत क्रिया समान कहलायें
इनमें जो चातुर्य शक्ति है–वह भी मेरी ही विभूति है

दोहा–इसका आशय यह नहीं, द्यूत क्रिया मै मान्य ।
इसमें निहित विशेषता, वह नहिं है सामान्य ।।
वस्तु व्यक्ति अरु क्रिया में, जो भी दिखे विशेष ।
मेरा चिन्तन वहीं कर, यह विभूति निर्देश ।।

तेज महापुरुषों में मैं हूँ–विजयी व्यक्ति की विजय मैं हूँ
अब भगवान भजन ही करना–यह संकल्प सुदृढ़ निज करना
श्रेय मार्ग का यह निश्चय ही–है विभूति मेरी अवश्य ही
सत्पुरुषों में निहित सत्त्वगुण–मैं ही सात्विक भाव आचरण

सुगम गीता व्याख्या पुस्तक से
लेखक – **श्री प्यारेलाल त्रिवेदी**
सी–2/53ए, लॉरेंस रोड, केशवपुरम्, दिल्ली–110035

पौष शुक्ल पक्ष विक्रम संवत् २०७३
१ जनवरी से १५ जनवरी २०१७ ई. तक

सूर्य दक्षिणायन — शिशिर ऋतु

दिन	तिथि	नक्षत्र	प्रविष्टि सौर मास	दिनांक आंग्लमास	विशेष विवरण
रविवार	तृतीया	श्रवण	१८	1	पंचक प्रारंभ, 28.29 से
सोमवार	चतुर्थी	धनिष्ठा	१९	2	श्री गणेश चतुर्थी
मंगलवार	पञ्चमी	शतभिषा	२०	3	
बुधवार	षष्ठी	पूर्वाभाद्रपद	२१	4	
गुरुवार	सप्तमी	उत्तराभाद्रपद	२२	5	श्री गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती
शुक्रवार	अष्टमी	रेवती	२३	6	पंचक समाप्त 15.45
शनिवार	नवमी	अश्विनी	२४	7	
रविवार	दशमी	भरणी	२५	8	पुत्रदा एकादशी व्रत (स्मार्त)
रविवार	एकादशी	00	००	00	क्षय
सोमवार	द्वादशी	कृतिका	२६	9	पुत्रदा एकादशी व्रत (वैष्णव)
मंगलवार	त्रयोदशी	मृगशिरा/रोहिणी	२७	10	भौम प्रदोष व्रत
बुधवार	चतुर्दशी	आर्द्रा	२८	11	
गुरुवार	पूर्णिमा	पुनर्वसु	२९	12	श्री सत्यनारायण व्रत, स्वामी विवेकानन्द जयंती, माघ स्नान प्रारंभ
शुक्रवार	प्रतिपदा	पुष्य	३०	13	लोहिड़ी पव।
शनिवार	द्वितीया	श्लेषा	१ माघ	14	मकर संक्रान्ति
रविवार	तृतीया	मघा	२	15	श्री गणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत

श्री अष्टावक्र गीता (जनक उवाच)

क्व धनानि क्व मित्राणि, क्व मे विषयदस्यवः ।
क्व शास्त्रं क्व च विज्ञानं, यदा मे गलिता स्पृहा ॥२॥ १४

"जब मेरी इच्छा ही समाप्त हो गई तो मुझको कहाँ धन है, कहाँ मित्र हैं, वहाँ विषय रूपी डाकू हैं, कहाँ शास्त्र है, और कहाँ ज्ञान है?"

विज्ञाते साक्षिपुरुषे परमात्मानि चेश्वरे ।
नैराश्ये बन्धमोक्षे च न चिन्ता मुक्तये मम ॥३॥ १४

"साक्षीपुरुष, परमात्मा और ईश्वर तथा निराशा, बंधन और मोक्ष को जान लेने के बाद अब मुझे मुक्ति के लिए कोई चिन्ता नहीं है।"

गुरु गोविंद सिंह जयंती

सिख समुदाय के दसवें धर्म-गुरु (सतगुरु) गोविंद सिंह जी का जन्म पौष शुदि सप्तमी संवत् 1723 (22 दिसंबर, 1666) को पटना शहर में गुरु तेग बहादुर और माता गुजरी के घर हुआ। गुरु गोविंद सिंह के जन्म उत्सव को 'गुरु गोविंद जयंती' के रूप में मनाया जाता है। इस शुभ अवसर पर गुरुद्वारों में भव्य कार्यक्रम सहित गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ किया जाता है। अंततः सामूहिक भोज (लंगर) का आयोजन किया जाता है।

गुरु गोविंद सिंह जयंती

गुरु गोविंद सिंह जयंती 5 जनवरी को मनाई जाएगी। पटना साहिब (जन्म स्थल), आनंदपुर साहिब (गुरुद्वारा केशगढ़) आदि स्थानों पर गुरु गोविंद सिंह जयंती बेहद धूमधाम से मनाई जाती है। खालसा पंथ के लिए यह दिन विशेष महत्त्व रखता है।

गुरु गोविंद सिंह जी का जीवन

गुरु गोविंद सिंह जी को सिख धर्म का सबसे वीर योद्धा और गुरु माना जाता है। गुरुजी ने निर्बलों को अमृतपान करवा कर शस्त्रधारी कर उनमें वीर रस भरा। उन्होंने ही खालसा पंथ में 'सिंह' उपनाम लगाने की शुरुआत की।

एक वीर योद्धा होने के साथ वह एक उत्कृष्ट कवि भी थे। समय के अनुकूल गुरुजी ने योगियों, पंडितों व अन्य संतों के मन की एकाग्रता के लिए बेअंत बाणी की रचना की।

गुरु गोविंद सिंह जी ने गुरु की पदवी को समाप्त करने 'गुरु ग्रंथ साहिब' को सिखों का गुरु बनाया। गुरु गोविंद सिंह जी ने आदेश दिया कि आगे से कोई भी देहधारी गुरु नहीं होगा और गुरु वाणी व गुरु ग्रंथ साहिब ही सिखों के लिए गुरु सामान्य होगी।

(स्रोत : इंटरनेट)

'तलाक' बंदी

'तीन तलाक' बंदी के समर्थन में माननीय इलाहाबाद उच्च न्यायालय का परामर्श सराहनीय है। मुस्लिम समाज में यह प्रथा उनकी अपनी ही महिलाओं के प्रति घोर अन्याय व अत्याचार है। अनेक मुस्लिम धर्म गुरु इसके पक्ष में खड़े है तो कइयों ने इसका विरोध करके भारत सरकार को भी ललकारने की कुचेष्ठा की है। धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में एक धार्मिक कुरीति को बनायें रख कर उस समाज की महिलाओं को अन्धकार में धकेलते रहना क्या उचित है? आज आधुनिक विज्ञानमय समाज में 'तीन तलाक' मानवता पर एक कलंक नहीं तो और क्या है? अपने समाज की महिलाओं को इस व्यवस्था में रखकर उसे व्याभिचारी बनाने से क्या मुस्लिम पुरुषों को कोई संतोष मिलेगा? ...संभवतः नहीं, हां कुछ कट्टरपंथियों की वर्षों से चली आ रही उनकी अधिनायकवादी/दादागिरी पर अंकुश अवश्य लगेगा? वस्तुतः तीन तलाक, हलाला व बहुविवाह से पीड़ित मुस्लिम महिलाओं की सजगता व सक्रियता ने ही न्याय की मांग करके अपने स्वतंत्र अधिकारों के लिए संघर्ष छेड़ा है। लेकिन यह हमारे तथाकथित धर्मनिरपेक्ष समाज पर एक करारा तमाचा है, जो धर्मनिरपेक्षता की दुहाई देते नहीं थकता परंतु मुस्लिम युवतियों व महिलाओं पर दशकों से हो रहे ऐसे अमानवीय अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाने से भी डरता है। केंद्र सरकार द्वारा गठित विधि आयोग द्वारा पिछले दिनों इन सब विवादों को दूर करने के लिए एक सर्वे भी कराया गया है। संभवतः उसके परिणाम भी मुस्लिम महिलाओं के पक्ष में ही होंगे। इसमें भी कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिये कि भविष्य में सर्वोच्च न्यायालय से भी मुस्लिम महिलाओं को उनके संघर्ष का समुचित न्याय मिलेगा? निसंदेह न्यायपालिका जनता के अधिकारों की रक्षा एक अभिभावक के रुप में करती है। अतः कानूनों को व्यवस्था सामाजिक जीवन को उन्नति की ओर ले जाने के लिए की जाती है, किसी के जीवन को अंधेरी कोठरी में बंद करने के लिए नहीं।

प्रेषक : **विनोद कुमार सर्वोदय**
गाजियाबाद

महान प्रेरणा स्रोत - स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद का जन्म नाम नरेंद्र नाथ दत्त भारतीय हिंदू संन्यासी और 19 वीं शताब्दी के संत रामकृष्ण परमहंस के मुख्य शिष्य थे। भारत का आध्यात्मिकता से परिपूर्ण दर्शन विदेशो में स्वामी विवेकानंद की वक्तृत्वता के कारण ही पहुंचा। भारत में हिंदू धर्म को बढ़ाने में उनकी मुख्य भूमिका रही और भारत को औपनिवेशक बनाने में उनका मुख्य सहयोग रहा। विवेकानंद ने रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, जो आज भी भारत में सफलता पूर्वक चल रहा है। उन्हें प्रमुख रूप से उनके भाषण की शुरुवात 'मेरे अमेरिकी भाइयों और बहनों' के साथ करने के लिए जाना जाता है। जो शिकागो विश्व धर्म सम्मलेन में उन्होंने ने हिंदू धर्म की पहचान कराते हुए कहे थे।

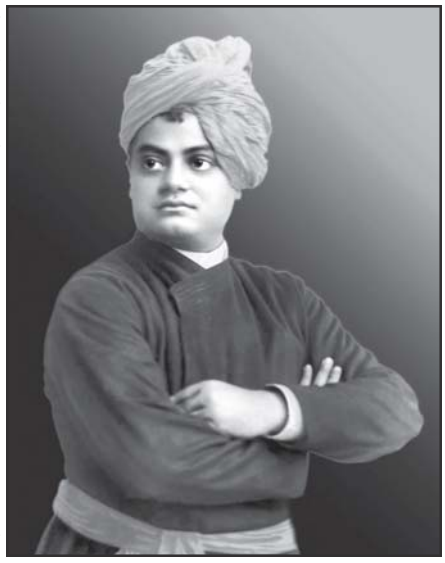

उनका जन्म कलकत्ता के बंगाली कायस्थ परिवार में हुआ था। स्वामीजी का ध्यान बचपन से ही आध्यात्मिकता की और था। उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस का उन पर सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ा, जिनसे उन्होंने जीवन जीने का सही उद्देश जाना, स्वयं की आत्मा को जाना और भगवान की सही परिभाषा को जानकर उनकी सेवा की और सतत अपने दिमाग को भगवान के ध्यान में लगाये रखा। रामकृष्ण परमहंस की मृत्यु के पश्चात्, विवेकानंद ने विस्तृत रूप से भारतीय उपमहाद्वीप की यात्रा की और ब्रिटिश कालीन भारत में लोगों की परिस्थितियों को जाना, उसे समझा। बाद में उन्होंने यूनाइटेड स्टेट की यात्रा जहाँ उन्होंने 1893 में विश्व धर्म सम्मलेन में भारतीयों के हिंदू धर्म का प्रतिनिधित्व किया। विवेकानंद ने यूरोप, इंग्लैंड और यूनाइटेड स्टेट में हिंदू शास्त्र की 100 से भी अधिक सामाजिक और वैयक्तिक क्लासेस ली और भाषण भी दिए। भारत में विवेकानंद एक देशभक्त संत के नाम से जाने जाते है और उनका जन्मदिन राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

प्रारंभिक जीवन, जन्म और बचपन

स्वामी विवेकानन्द का जन्म (नरेंद्र, नरेन) 12 जनवरी 1863 को मकर संक्रांति के समय उनके पैतृक घर कलकत्ता के गौरमोहन मुखर्जी स्ट्रीट में हुआ, जो ब्रिटिशकालीन भारत की राजधानी थी। उनका परिवार एक पारंपरिक कायस्थ परिवार था, विवेकानंद के 9 भाई-बहन थे। उनके पिता, विश्वनाथ दत्ता, कलकत्ता हाई कोर्ट के वकील थे। दुर्गाचरण दत्ता जो नरेन्द्र के दादा थे, वे संस्कृत और पारसी के विद्वान थे जिन्होंने 25 साल की उम्र में अपना परिवार और घर छोड़कर एक संन्यासी का जीवन स्वीकार कर लिया था। उनकी माता, भुवनेश्वरी देवी एक देवभक्त गृहिणी थी। स्वामीजी के माता और पिता के अच्छे संस्कारों और अच्छी परवरिश के कारण स्वामीजी के जीवन को एक अच्छा आकार और एक उच्चकोटि की सोच मिली।

युवा दिनों से ही उनमें आध्यात्मिकता के क्षेत्र में रूचि थी, वे हमेशा भगवान की तस्वीरों जैसे शिव, राम और सीता के सामने ध्यान लगाकर साधना करते थे। साधुओं और संन्यासियों की बातें उन्हें हमेशा प्रेरित करती रही। नरेंद्र बचपन से ही बहुत शरारती और कुशल बालक थे, उनके माता पिता को कई बार उन्हें सँभालने और समझने में परेशानी होती थी। उनकी माता हमेशा कहती थी की, 'मैंने शिवजी से एक पुत्र की प्रार्थना की थी, और उन्होंने तो मुझे एक शैतान ही दे दिया'।

शिक्षा

1871 में, 8 साल की आयु में स्वामी विवेकानन्द को ईश्वर चन्द्र विद्यासागर मेट्रोपोलिटन इंस्टिट्यूट में डाला गया, 1877 में जब उनका परिवार रायपुर स्थापित हुआ तब तक नरेंद्र ने उस स्कूल से शिक्षा ग्रहण की। 1879 में, उनके परिवार के कलकत्ता वापिस आ जाने के बाद प्रेसीडेंसी कॉलेज की एंट्रेंस परीक्षा में फर्स्ट डिवीजन लाने

वाले वे पहले विद्यार्थी बने। वे विभिन्न विषयों जैसे दर्शन शास्त्र, धर्म, इतिहास, सामाजिक विज्ञान, कला और साहित्य के उत्सुक पाठक थे। हिंदू धर्मग्रंथो में भी उनकी बहुत रूचि थी जैसे वेद, उपनिषद, भगवत गीता, रामायण, महाभारत और पुराण। नरेंद्र भारतीय पारंपरिक संगीत में निपुण थे और हमेशा शारीरिक योग, खेल और सभी गतिविधियों में सहभागी होते थे।

नरेंद्र ने पश्चिमी तर्क, पश्चिमी जीवन और यूरोपियन इतिहास की भी पढ़ाई जनरल असेंबली इंस्टिट्यूट से कर रखी थी। 1881 में, उन्होंने ललित कला की परीक्षा पास की और 1884 में कला स्नातक की डिग्री पूरी की। नरेंद्र ने डेकार्ट का अंहवाद, डार्विन का विकासवाद, स्पेंसर के अद्वेतवाद को सुनकर नरेन्द्रनाथ सत्य को पाने का लिये व्याकुल हो गये। अपने इसी उद्देश्य की पूर्ती हेतु ब्रह्मसमाज में गये। उन्होंने स्पेंसर की शिक्षा किताब (1861) को बंगाली में भी परिभाषित किया। जब वे पश्चिमी दर्शन शास्त्रियों का अभ्यास कर रहे थे तब उन्होंने संस्कृत ग्रंथो और बंगाली साहित्यों को भी पढ़ा। विलियम हेस्टी (जनरल असेंबली संस्था के अध्यक्ष) ने ये लिखा की, 'नरेंद्र सच में बहुत होशियार है, मैंने कई यात्रायें की बहुत दूर तक गया लेकिन मैं और जर्मन विश्वविद्यालय के दर्शन शास्त्र के विद्यार्थी भी कभी नरेंद्र के दिमाग और कुशलता के आगे नहीं जा सके'। कुछ लोग नरेंद्र को श्रुतिधरा 'भयंकर स्मरण शक्ति वाला व्यक्ति) कहकर बुलाते थे।

रामकृष्ण परमहंस के साथ- 1881 में नरेंद्र पहली बार रामकृष्ण परहंस से मिले, जिन्होंने नरेंद्र के पिता की मृत्यु पश्चात मुख्य रूप से नरेंद्र पर आध्यात्मिक प्रकाश डाला।

जब विलियम हेस्टिंग जनरल असेंबली संस्था में विलियम वर्डसवर जी की कविता 'पर्यटन' पर भाषण दे रहे थे, तब नरेंद्र ने अपने आप को रामकृष्ण परमहंस से परिचित करवाया था। जब वे कविता के एक शब्द 'ट्रांस' का मतलब समझा रहे थे, तब उन्होंने अपने विद्यार्थियों से कहा की वे इसका मतलब जानने के लिए दक्षिणेश्वर में स्थित रामकृष्ण परमहंस से मिले। उनकी इस बात ने कई विद्यार्थियों को रामकृष्ण परमहंस से मिलने को प्रेरित किया, जिसमे नरेंद्र भी शामिल थे।

वे व्यक्तिगत रूप से नवम्बर 1881 में मिले, लेकिन नरेंद्र उसे अपनी रामकृष्ण परमहंस के साथ पहली मुलाकात नहीं मानते और ना ही कभी किसी ने उस मुलाकात को नरेंद्र और रामकृष्ण परमहंस की पहली मुलाकात के रूप में देखा। उस समय नरेंद्र अपनी आने वाली (ललित कला) परीक्षा की तैयारी कर रहे थे। जब रामकृष्ण परमहंस को सुरेन्द्र नाथ मित्र के घर अपना भाषण देने जाना था, तब उन्होंने नरेंद्र को अपने साथ ही रखा। परांजपे के अनुसार, 'उस मुलाकात में रामकृष्ण परमहंस ने युवा नरेंद्र को कुछ गाने के लिए कहा था। और उनके गाने की कला से मोहित होकर उन्होंने नरेंद्र को अपने साथ दक्षिणेश्वर चलने कहा।

1881 के अंत और 1882 में प्रारंभ में, नरेंद्र अपने दो मित्रों के साथ दक्षिणेश्वर गये और वह वे रामकृष्ण परमहंस से मिले। उनकी यह मुलाकात उनके जीवन का सबसे बड़ा टर्निंग-प्वाइंट बना। उन्होंने जल्द ही रामकृष्ण परमहंस को अपने गुरु के रूप में स्वीकार नही किया, और ना ही उनके विचारों के विरुद्ध कभी गये। वे तो बस उनके चरित्र से प्रभावित थे इसीलिए जल्दी से दक्षिणेश्वर चले गये। उन्होंने जल्द ही रामकृष्ण परमहंस के परम आनंद और स्वप्न को 'कल्पनाशक्ति की मनगढ़त बातो' और 'मतिभ्रम' के रूप में देखा। ब्रह्म समाज के सदस्य के रूप में, वे मूर्ति पूजा, बहुदेववाद और रामकृष्ण परमहंस की काली देवी के पूजा के विरुद्ध थे। उन्होंने अद्वैत वेदांत के 'पूर्णतया समान समझना' को ईश्वर निंदा और पागलपंती समझते हुए अस्वीकार किया और उनका उपहास भी उड़ाया। नरेंद्र ने रामकृष्ण परमहंस की परीक्षा भी ली, जिन्होंने (रामकृष्ण) उस विवाद को धैर्यपूर्वक सहते हुए कहा, 'सभी दृष्टिकोणों से सत्य जानने का प्रयास करें'।

नरेंद्र के पिता की 1884 में अचानक मृत्यु हो गयी और परिवार दिवालिया बन गया था, साहूकार दिए हुए कर्जे को वापिस करने की मांग कर रहे थे और उनके रिश्तेदारों ने भी उनके पूर्वजो के घर से उनके अधिकारों

को हटा दिया था। नरेंद्र अपने परिवार के लिए कुछ अच्छा करना चाहते थे, वे अपने महाविद्यालय के सबसे गरीब विद्यार्थी बन चुके थे। असफलता पूर्वक वे कोई काम ढूंढ़ने में लग गये और भगवान के अस्तित्व का प्रश्न उनके सामने निर्मित हुआ, जहा रामकृष्ण परमहंस के पास उन्हें तसल्ली मिली और उन्होंने दक्षिणेश्वर जाना बढ़ा दिया।

एक दिन नरेंद्र ने रामकृष्ण परमहंस से उनके परिवार के आर्थिक भलाई के लिए काली माता से प्रार्थना करने कहा और रामकृष्ण परमहंस की सलाह से वे तीन बार मंदिर गये, लेकिन वे हर बार उन्हें जिसकी जरुरत है वो मांगने में असफल हुए और उन्होंने खुद को सच्चाई के मार्ग पर ले जाने और लोगों की भलाई करने की प्रार्थना की। उस समय पहली बार नरेंद्र ने भगवान की अनुभूति की थी और उसी समय से नरेंद्र ने रामकृष्ण परमहंस को अपना गुरु मान लिया था।

1885 में, रामकृष्ण परमहंस को गले का कैंसर हुआ और इस वजह से उन्हें कलकत्ता जाना पड़ा और बाद में कोस्सिपोरे गार्डन जाना पड़ा। नरेंद्र और उनके अन्य साथियों ने रामकृष्ण परमहंस के अंतिम दिनों में उनकी सेवा की और साथ ही नरेंद्र की आध्यात्मिक शिक्षा भी शुरू थी। कोस्सिपोरे में नरेंद्र ने निर्विकल्प समाधी का अनुभव लिया। नरेंद्र और उनके अन्य शिष्यों ने रामकृष्ण परमहंस से भगवा पोशाक लिया, तपस्वी के समान उनकी आज्ञा का पालन करते रहे। रामकृष्ण परमहंस ने अपने अंतिम दिनों में उन्हें सिखाया की मनुष्य की सेवा करना ही भगवान की सबसे बड़ी पूजा है। रामकृष्ण परमहंस ने नरेंद्र को अपने मठवासियों का ध्यान रखने कहा और कहा कि वे नरेंद्र को एक गुरु की तरह देखना चाहते है और रामकृष्ण परमहंस का 16 अगस्त 1886 को कोस्सिपोरे में प्रातः स्वर्गवास हुआ।

मृत्यु

4 जुलाई 1902 (उनकी मृत्यु का दिन) को विवेकानंद सुबह जल्दी उठे और बेलूर मठ के पूजा घर में पूजा करने गये और बाद में 3 घंटे तक योग भी किया। उन्होंने छात्रों को शुक्ल-यजूर-वेद, संस्कृत और योग साधना के विषय में पढाया, बाद में अपने सहशिष्यों के साथ चर्चा की और रामकृष्ण मठ में वैदिक महाविद्यालय बनाने पर विचार विमर्श किये। सायं 7 बजे विवेकानंद अपने कक्ष में गये और अपने शिष्य को शांति भंग करने के लिए मना किया, और रात्रि 9 बजे योगा करते समय उनकी मृत्यु हो गयी। उनके शिष्यों के अनुसार, उनकी मृत्यु का कारण उनके दिमाग में रक्तवाहिनी में दरार आने के कारण उन्हें महासमाधि प्राप्त होनी है। उनके शिष्यों के अनुसार उनकी महासमाधि का कारण ब्रह्मरंधरा (योगा का एक प्रकार) था। उन्होंने अपनी भविष्यवाणी को सही साबित किया की वे 40 साल से ज्यादा नहीं जियेंगे। बेलूर की गंगा नदी में उनके शव को चन्दन की लकडियों से अग्नि दी गयी।

श्री रामकृष्ण परमहंस से प्रभावित होकर वे आस्तिकता की ओर उन्मुख हुए थे और उन्होंने सारे भारत में घूम-घूम कर ज्ञान की ज्योत जलानी शुरु कर दी।

'उठो, जागो और तब तक रुको नहीं
जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाये!!'

स्वामी विवेकानंद द्वारा कहे इस वाक्य ने उन्हें विश्व विख्यात बना दिया था और यही वाक्य आज कई लोगों के जीवन का आधार भी बन चुका है। इसमें कोई शक नहीं की स्वामीजी आज भी अधिकांश युवाओं के आदर्श व्यक्ति है। उनकी हमेशा से ये सोच रही है की आज के युवक को शारीरिक प्रगति से ज्यादा आंतरिक प्रगति करने की जरुरत है। आज के युवाओं को अलग-अलग दिशा में भटकने की बजाये एक ही दिशा में ध्यान केन्द्रित करना चाहिये और अंत तक अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करते रहना चाहियें। युवाओं को अपने प्रत्येक कार्य में अपनी समस्त शक्ति का प्रयोग करना चाहिये। (स्रोत : इंटरनेट)

धर्म में कोई जाति भेद नहीं होती; जाति तो केवल एक सामाजिक व्यवस्था है।

-स्वामी विवेकानन्द

मकर संक्रांति

मकर संक्रांति हिंदू धर्म का प्रमुख त्योहार है। यह पर्व पूरे भारत में किसी न किसी रूप में मनाया जाता है। जब सूर्य मकर राशि पर आता है तब इस संक्रांति को मनाया जाता है।

यह त्योहार अधिकतर जनवरी माह की चौदह तारीख को मनाया जाता है। कभी-कभी यह त्यौहार बारह, तेरह या पंद्रह को भी हो सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि सूर्य कब धनु राशि को छोड़ मकर राशि में प्रवेश करता है। इस दिन से सूर्य की उत्तरायण गति आरंभ होती है और इसी कारण इसको उत्तरायणी भी कहते हैं।

कहा जाता है कि इस दिन भगवान सूर्य अपने पुत्र शनि से मिलने स्वयं उसके घर जाया करते हैं। शनिदेव चूंकि मकर राशि के स्वामी हैं, अत: इस दिन को मकर संक्रांति के नाम से जाना जाता है।

मकर संक्रांति के दिन ही गंगाजी भागीरथ के पीछे-पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होकर सागर में जा उनसे मिली थीं। यह भी कहा जाता है कि गंगा को धरती पर लाने वाले महाराज भगीरथ ने अपने पूर्वजों के लिए इस दिन तर्पण किया था। उनका तर्पण स्वीकार करने के बाद इस दिन गंगा समुद्र में जाकर मिल गई थी। इसलिए मकर संक्रांति पर गंगा सागर में मेला लगता है।

महाभारत काल के महान योद्धा भीष्म पितामह ने भी अपनी देह त्यागने के लिए मकर संक्रांति का ही चयन किया था।

इस त्योहार को अलग-अलग प्रांतों में अलग-अलग नाम से मनाया जाता है। मकर संक्रांति को तमिलनाडु में पोंगल के रूप में तो आंध्रप्रदेश, कर्नाटक व केरल में यह पर्व केवल संक्रान्ति के नाम से जाना जाता है।

इस दिन भगवान विष्णु ने असुरों का अंत कर युद्ध समाप्ति की घोषणा की थी व सभी असुरों के सिरों को मंदार पर्वत में दबा दिया था। इस प्रकार यह दिन बुराइयों और नकारात्मकता को खत्म करने का दिन भी माना जाता है।

यशोदा जी ने जब कृष्ण जन्म के लिए व्रत किया था तब सूर्य देवता उत्तरायण काल में पदार्पण कर रहे थे और उस दिन मकर संक्रांति थी। कहा जाता है तभी से मकर संक्रांति व्रत का प्रचलन हुआ।

धर्म ग्रंथों में उल्लेख

मकर संक्रान्ति का उद्‌गम बहुत प्राचीन नहीं है। ईसा के कम से कम एक सहस्त्र वर्ष पूर्व ब्राह्मण एवं औपनिषदिक ग्रंथों में उत्तरायण के छ: मासों का उल्लेख है, जहाँ स्पष्ट रूप से उत्तरायण आदि कालों में संस्कारों के करने की विधि वर्णित है। किंतु प्राचीन श्रौत, गृह्य एवं धर्म सूत्रों में राशियों का उल्लेख नहीं है, उनमें केवल नक्षत्रों के संबंध में कालों का उल्लेख है। याज्ञवल्क्यस्मृति में भी राशियों का उल्लेख नहीं है, जैसा कि विश्वरूप की टीका से प्रकट है। अत: मकर संक्रान्ति, जिससे सूर्य की उत्तरायण गति आरम्भ होती है, राशियों के चलन के उपरान्त पवित्र दिन मानी जाने लगी। मकर संक्रान्ति पर तिल को इतनी महत्ता क्यों प्राप्त हुई, कहना कठिन है। सम्भवत: मकर संक्रान्ति के समय शीत ऋतु होने के कारण तिल जैसे पदार्थों का प्रयोग सम्भव है। ईसवी सन् के आरम्भ काल से अधिक प्राचीन मकर संक्रान्ति नहीं है।

संक्रांति का अर्थ

'संक्रान्ति' का अर्थ है सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना, अत: वह राशि जिसमें सूर्य प्रवेश करता है, संक्रान्ति की संज्ञा से विख्यात है। राशियाँ बारह हैं, यथा मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन। मलमास पड़ जाने पर भी वर्ष में केवल 12 राशियाँ होती हैं। प्रत्येक संक्रान्ति पवित्र दिन के रूप में ग्राह्य है। मत्स्यपुराण, ने संक्रान्ति व्रत का वर्णन किया है। एक दिन पूर्व व्यक्ति (नारी या

पुरुष) को केवल एक बार मध्याह्न में भोजन करना चाहिए और संक्रान्ति के दिन दाँतों को स्वच्छ करके तिल युक्त जल से स्नान करना चाहिए। व्यक्ति को चाहिए कि वह किसी संयमी ब्राह्मण गृहस्थ को भोजन सामग्रियों से युक्त तीन पात्र तथा एक गाय यम, रुद्र एवं धर्म के नाम पर दे और चार श्लोकों को पढ़े, जिनमें से एक यह है- 'यथा भेदं' न पश्यामि शिवविष्णवर्कपद्मजान्न। तथा ममास्तु विश्वात्मा शंकररूशंकरः सदा।। अर्थात् 'मैं शिव एवं विष्णु तथा सूर्य एवं ब्रह्मा में अन्तर नहीं करता, वह शंकर, जो विश्वात्मा है, सदा कल्याण करने वाला है। दूसरे शंकर शब्द का अर्थ है- शं कल्याणं करोति। यदि हो सके तो व्यक्ति को चाहिए कि वह ब्राह्मण को आभूषणों, पर्यंक, स्वर्णपात्रों (दो) का दान करे। यदि वह निर्धन हो तो ब्राह्मण को केवल फल दे। इसके उपरान्त उसे तेल-विहीन भोजन करना चाहिए और यथा शक्ति अन्य लोगों को भोजन देना चाहिए। स्त्रियों को भी यह व्रत करना चाहिए। संक्रान्ति, ग्रहण, अमावस्या एवं पूर्णिमा पर गंगा स्नान महापुण्यदायक माना गया है और ऐसा करने पर व्यक्ति ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है। प्रत्येक संक्रान्ति पर सामान्य जल (गर्म नहीं किया हुआ) से स्नान करना नित्यकर्म कहा जाता है, जैसा कि देवीपुराण में घोषित है- 'जो व्यक्ति संक्रान्ति के पवित्र दिन पर स्नान नहीं करता वह सात जन्मों तक रोगी एवं निर्धन रहेगा। संक्रान्ति पर जो भी देवों को हव्य एवं पितरों को कव्य दिया जाता है, वह सूर्य द्वारा भविष्य के जन्मों में लौटा दिया जाता है। (स्रोत : इंटरनेट)

जम्मू में रोहिंग्या मुस्लिम घुसपैठ

यह अत्यंत दुखद व निंदनीय है कि म्यंमार से भागे रोहिंग्या मुसलमान घुसपैठियों को सरकार जम्मू में 'बसाने' की अनुमति दे रही है। इस प्रकार जम्मू क्षेत्र में जनसंख्या अनुपात को बिगाड़ कर निज़ामे-मुस्तफा कायम करने के घिनौने षड्यंत्र को क्यों रचा जा रहा है? जबकि लगभग 5 लाख कश्मीरी हिन्दू विस्थापितों को उनके मूल स्थानों में बसाने में सरकार अभी तक असमर्थ है।

ध्यान रहें कि 90 के दशक में कश्मीर के मूल हिन्दू निवासियों पर कट्टरपंथी मुसलमानों ने भीषण अत्याचार किये थे। उनका इतना अधिक उत्पीड़न किया गया जिससे वे वहां से पलायन करने को विवश हुए। यहां यह कहना भी अनुचित नहीं होगा कि कश्मीर से गैर मुसलमानों (काफिरों) को खदेड़ने की कुटिल व घृणित मानसिकता वहां के कट्टरपंथियों की जम्मू-कश्मीर में निज़ामे-मुस्तफा (दारुल-इस्लाम) की स्थापना का कुप्रयास है। परिणामस्वरूप पिछले लगभग 25 वर्षों से जम्मू-कश्मीर के हिन्दू विभिन्न स्थानों पर सामान्य जीवन जीने के लिए भटक रहे है।

ऐसे में जम्मू कश्मीर में रोहिंग्या मुसलमान घुसपैठियों को बसाने का विचार केवल धार्मिक कट्टरता को ही बढ़ाने के संकेत है। क्या यह देश के साथ द्रोह और धर्मनिरपेक्षता पर इस्लाम का आक्रमण नहीं है? हमको याद रखना होगा कि सीरिया-ईराक से शरणार्थियों के रुप में आये मुस्लिम घुसपैठियों के अत्याचारों से आज विश्व के अनेक देश पीड़ित है। जबकि हम भी पहले ही लगभग 5 करोड़ बांग्लादेशी घुसपैठियों के कारण आतंक व अपराध से ग्रस्त है। ऐसे में म्यंमार के मुस्लिम घुसपैठियों को प्रवेश देकर क्या आर्तकियों व अपराधियों का दुःसाहस नहीं बढ़ेगा? क्या बढ़ती हुई राष्ट्रविरोधी गतिविधियों का कभी अन्त हो पायेगा? कब तक मुस्लिम तुष्टिकरण से हिन्दू स्वाभिमान हारता रहेगा?

अतः केंद्र सरकार को रोहिंग्या मुस्लिम घुसपैठियों के प्रवेश को ही निषेध करना होगा साथ ही जम्मू-कश्मीर में प्रस्तावित सैनिक कालोनी व विस्थापित कश्मीरी हिन्दुओं के लिए कालोनियों के निर्माण की योजनाओं को अविलंब आरम्भ करना चाहिये।

प्रेषक : **विनोद कुमार सर्वोदय**
गाजियाबाद

शिक्षण का उद्देश्य केवल ज्ञान और कौशल देना नहीं है, परन्तु उसे मनुष्य को जीवन में विशेष ध्येय भी प्रदान करना चाहिए। -**डॉ. एस. राधाकृष्णन**

शोर में खामोश संसद, दिखावा लोकतंत्र का

-विनोद बब्बर

नोटबंदी के सद्प्रभाव जब आयेंगे तब आयेंगे लेकिन संसद के शीतकालीन सत्र का शोर में डूब जाना ऐसा दुष्प्रभाव है जो लोकतंत्र को गहरे तक नुकसान पहुंचा सकता है क्योंकि एक ओर प्रधानमंत्री कह रहे कि उन्हें संसद में बोलने नहीं दिया जा रहा इसलिए वे जनसभा में अपनी बात रख रहे हें तो दूसरी ओर विपक्ष भी कमोवेश यही बात कह रहा है। आश्चर्य है कि दोनों पक्ष सड़क पर तो बहुत कुछ कह रहे हैं लेकिन संसद उनके शोर से निशब्द है और जनता हतप्रभ क्योंकि वह प्रधानमंत्री जी से चाह कर भी पूछ नहीं पा रही है कि अगर वे बहुमत के बावजूद संसद में बोल नहीं पा रहे हैं तो इसमें जनता का क्या अपराध है? प्रचंड बहुमत उसकी कमजोरी क्यों है? आखिर जनता इससे अधिक उनके लिए क्या करें? क्या संसदीय लोकतंत्र का मतलब अराजकता के समक्ष घुटने टेकना है? यदि नहीं तो पहले से स्थापित संसदीय नियमों के तहत कोई रास्ता निकालना अथवा कार्यवाही न करने के पीछे क्या विवशता है?

विवश जनता चाह कर भी विपक्ष से नहीं पूछ पा रही है कि आखिर आप अपने इस व्यवहार से लोकतंत्र को घायल क्यों कर रहे हो? संसद को बंधक बनाकर आपने किस प्रकार से जनता के हितों का संरक्षण किया है? आप नोटबंदी को उचित मानते हो लेकिन उसके क्रियान्वयन को गलत मानते हैं लेकिन आपके पास इसके लिए क्या सुझाव हैं? सड़क पर आप सरकार पर घोटाले के आरोप लगा सकते हो तो संसद में इन आरोपों के साथ बहस करने से क्यों बचना चाहते हो? आखिर आपको एकतरफा संवाद क्यों भाता है? क्या आपका यह व्यवहार लोकतंत्र को मजबूत कर रहा है? यदि हाँ, तो किस प्रकार से? क्या यह सही नहीं कि आप जनता द्वारा आपको सौपी गई विपक्ष की भूमिका से संतुष्ट नहीं है और किसी भी तरह से वर्तमान सरकार का बर्दाश्त नहीं करना चाहते हो?

नोटबंदी बनाम संसद बंदी के दौर में हम किस अधिकार से इस बात पर गर्व करे कि दुनिया भारत को

सबसे बड़ा लोकतंत्र बताती है? जब हमारी संसद ही शोर में डूबी है तो हम कैसे कहे कि हमने दुनिया को एक श्रेष्ठ शासन प्रणाली दी है? क्या पूरे सत्र का आवश्यक कामकाज निबटाये बिना निपट जाना श्रेष्ठ प्रणाली का प्रमाण है? जनता की आर्थिक पीड़ा को स्वर देने का दावा करने वालों के पास इस बात का क्या जवाब है कि इस सत्र की बर्बादी से करोड़ों की बर्बादी का जिम्मेवार कौन है? एक-दूसरे को दोषी ठहर कर लोकतंत्र की सेवा नहीं की जा सकती। यदि दोनो पक्षों को अपराधबोध नहीं है तो स्पष्ट है कि उन्हें न तो 'लोक' की चिंता है और न ही 'तंत्र' की। जरूर वे अपनी-अपनी विवशताओं को लेकर विवश है। क्या कभी मलेशिया के पूर्व प्रधानमंत्री महातिर मोहम्मद ने ठीक नहीं कहा था, 'भारत में जरूरत से ज्यादा लोकतंत्र है वरना.....।'

निश्चित और निर्विवाद रूप से विपक्ष लोकतंत्र का अनिवार्य अंग है। विपक्ष के बिना लोकतंत्र की कल्पना भयावह है। किसी भी सरकार को निरंकुश बनने से रोकने में विपक्ष की भूमिका है। लेकिन जब विरोध ससंदीय कामकाज में अवरोध उत्पन्न करने लगे और वैधानिक संकट तक उत्पन्न होने की स्थिति उत्पन्न होने लगे तो विरोध की सीमाओं पर विचार होना चाहिए। इस बात का कोई अर्थ नहीं कि आज के सत्तारूढ़ पक्ष ने कल जब वह विपक्ष में था तो यही सब किया था। अत: आज उसे इसका विरोध करने का अधिकार नहीं है क्योंकि यह भी याद रखना जरूरी है कि आज के विपक्ष और बीते हुए कल के सत्तारूढ़ दल का इस विरोध के प्रति क्या रवैया था। क्या वह उस समय इससे असहज नहीं था? क्या

बदला लेने की बजाय यह उचित नहीं होता कि आप जिम्मेवार विपक्ष की भूमिका का निर्वहन कर भविष्य के लिए उदाहरण प्रस्तुत करते?

क्या हताश विपक्ष को इतना भी मालूम नहीं कि किसी भी सजग लोकतंत्र में पक्ष-विपक्ष की भूमिकाओं में कोई भी बदलाव अंतिम नहीं होता। क्या बदला और बदले का बदला लोकतंत्र को आहत नहीं कर रहे हैं? उसे कभी अपने ही वरिष्ठ नेता रहे और वर्तमान में इस देश के सर्वोच्च पद पर आसीन महामहिम की संसद को ठप्प करने के संबंध में टिप्पणी का महत्त्व और अर्थ समझ में क्यों नहीं आया?

क्या यह सत्य नहीं कि आज हमारा लोकतंत्र व्यक्तिवाद और वंशवाद के दो अतिवादी ध्रुवों के बीच कराह रहा है? क्या इस स्थिति से बाहर निकलना किसी एक पक्ष के बिना संभव है? सांपनाथ, नागनाथ, भुजंगनाथ के हर प्रयोग के बाद एक राज्य में 'मदारीनाथ' को आजमाने के बाद भी स्थिति के लगातार बद से बदतर होने पर आखिर जनता अब क्या करें? लोकतंत्र में संवाद के बदले विवाद के दौर में यदि मतदान के प्रति जनता की रूचि कम होती है तो इसका जिम्मेवार कौन है? क्या कैशलैस के शोर के बीच पब्लिक लैस चुनाव को लोकतंत्र का काला अध्याय नहीं कहा जायेगा?

संसद संवाद का मंच है। लोकतंत्र में हर विवाद का समाधान संवाद से ही संभव है। उसे किसी भी कीमत पर, किसी भी काल में अखाड़ा नहीं बनाया जाना चाहिए। यह सुनिश्चित होना चाहिए कि संसद का कामकाज हर हालत में चले क्योंकि संसद के न चलने से अनेक महत्त्वपूर्ण विधेयक अटक गये है। बदलते दौर में भारत की तस्वीर धुंधली होने से बचाने के लिए दोनों पक्षो को हठधर्मिता छोड़नी चाहिए। भविष्य में इस तरह के विवाद ही उत्पन्न न हो, इसके लिए प्रयास होने चाहिए। यदि लोकसभा अध्यक्ष अपने पूर्व दल के प्रति 'सॉफ्ट कॉर्नर' से ऊपर उठकर मर्यादा का उल्लंघन करने वाले हर व्यक्ति के विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही करे तो....! आखिर यह देश किसी भी नेता अथवा दलों के दलदल से बड़ा है। लोकतंत्र लोकलाज से चलता है। इसकी रक्षा के लिए बड़ी से बड़ी कीमत चुकाई जानी चाहिए। मेरे देश की प्रतिष्ठा को आंच नहीं आनी चाहिए चाहे इसके लिए सौ दल और हजार नेता भी कुर्बान क्यों न करने पड़ें। सभी को इसका स्थाई समाधान ढूंढ़ना होगा अन्यथा लोकतंत्र अराजकता का पर्याय बन सकता है। अराजकता और लोकतंत्र को एकाकार होने से बचाने के लिए मनमाने फैसलों पर विरोध का कोई तरीका ऐसा निकाला जाए जिससे कम से कम अव्यवस्था के साथ विरोध का लक्ष्य पूरा हो सके।

यह हर्गिज नहीं भुलाया जाना चाहिए कि नोटबंदी से जो कठिनाईयां पेश आ रही है वे अस्थाई दौर होते हुए भी कष्टकारी है। आज लोकतंत्र और विकास एक-दूसरे के पूरक है। लेकिन दोनों में एक को चुनने का निर्णय बहुत जटिल है परंतु भूख और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में किसके पक्ष में निर्णय होगा यह सभी जानते हैं। विकास कार्यों में बाधा अंततः लोकतंत्र की बेड़ी बनेगी। विश्व के अनेक देशों को प्रतिबंधित लोकतंत्र के कटु अनुभव प्राप्त है। हमें भी आपातकाल नहीं भूल सकता जब सम्पूर्ण विपक्ष को अकारण जेल में डाल दिया गया था।

किसी भी लोकतंत्र को अधिकतम दोषमुक्त बनाकर ही यहां के आम नागरिकों के जीने के अधिकार और विकास को सुनिश्चित किया जा सकता है। निश्चित रूप से 86 प्रतिशत मुद्रा के एकाएक चलन से बाहर होने के कारण जनता को असुविधा हो रही है लेकिन शोर में खामोश संसद ने उसकी कठिनाईयों को अभिव्यक्त करने की बजाय उसकी विवशता का मजाक ही उड़ाया है। संसद से बाहर नारे, लच्छेदार भाषण लेकिन अंदर शोर से संसद को ठप्प करने वालों हमारे लोकतंत्र को संवेदना के नाम पर शोर की बजाय संवाद, बहस ओर लौटा दो! कृपया संसद को संसद ही रहने दो जो 'जनता की, जनता के द्वारा, जनता के लिए' हो। ❑

भाग्य के सामने हमारी श्रेष्ठ बुद्धि व्यर्थ सिद्ध होती है, और यदि हम पर भाग्य दयालु है तो हमारी भूलें भी हमारे लिए लाभदायक बन जाती है। -**महाभारत**

'अफजल' का 'गुरु' जीवित है...

आज संसद पर आतंकी आक्रमण के 15 वर्ष पूरे हुए है, लेकिन उस जिहादी जनून को जीवित रखने वाले अभी भी अपनी गतिविधियों में संलिप्त हो तो कोई आश्चर्य नहीं? इसी वर्ष 9 फरवरी को आतंकी अफजल की वर्सी पर जवाहर लाल नेहरु यूनिवसिटी (JNU) में चल रही देशद्रोही गतिविधियों के पीछे एक शातिर संदिग्ध आतंकी सैय्यद अब्दुल रहमान गिलानी का भी नाम आया था। ध्यान रहें यह वही गिलानी है जिसको अफजल गुरु के साथ ही 13.12.2001 के संसद पर आक्रमण का दोषी पाया गया था। इस हमले में 5 आतंकी मारे गए थे व 9 सुरक्षा कर्मियों का बलिदान हुआ था। गिलानी को भी निचली अदालत (lower court) ने फांसी की सजा सुनाई थी, पर बाद में दिल्ली उच्च न्यायालय (high court) ने कुछ कानूनी कमियों व पर्याप्त साक्ष्य न होने के कारण गिलानी को बरी कर दिया था। यह दिल्ली में जामिया नगर के जाकिर कॉलोनी में रहता है व जाकिर हुसैन कालिज (साँध्य) का पूर्व प्राध्यापक है।

संसद पर हमले का एक अन्य आतंकी शौकत हुसैन गुरु जो अफजल गुरु का चचेरा भाई है को भी मृत्यु दंड मिला था पर सर्वोच्च न्यायालय ने इसको 10 वर्ष की सजा दी थी जो 2010 में ही छोड़ दिया गया था। यह भी दिल्ली में ही रहता है और अफजल भी इसके पास रहकर फलों का व्यापार करता था। शौकत की पत्नी अफशां गुरु उर्फ़ नवजोत संधु जो सिक्ख थी उसने मुस्लिम बन कर निकाह किया उसे भी 5 वर्ष की सजा हुई थी।

अफजल जो जैशे-ए-मोहम्मद व जमात-उल-दावा के संपर्क में था व उसने पी.ओ.के. में हथियारों का भी प्रशिक्षण लिया था। मोहम्मद अफजल गुरु कहता था कि उसकी भारत के संविधान, कानून और न्याय में कोई आस्था नहीं है और उसे अपने किये पर कोई पछतावा नहीं था। वह कहता था कि अवसर मिला तो वह फिर यही करेगा। मृत्यु दंड देने वाले जस्टिस ढींगरा का कहना था कि संसद पर हमला देश की अस्मिता पर हमला है यह सीधा-सीधा राष्ट्र पर आक्रमण था। राष्ट्रवादियों के बढ़ते दबाव व आंदोलनो के उपरान्त अंतत: मो. अफजल गुरु को 9 फरवरी 2013 को सुबह 8 बजे तिहाड़ जेल, नई दिल्ली में फांसी दी गयी थी।

कश्मीरियों के साथ-साथ नक्सलियों ने भी अफजल गुरु को अपना हीरो बना रखा है उन्होंने अपनी पत्रिका के कवर पर अफजल का फोटो भी छापा था। अफजल की फांसी के विरोध में पाकिस्तान व कश्मीर में कुछ स्थानों पर प्रदर्शन हुए थे।

जम्मू-कश्मीर के उस समय (2006) के मुख्यमंत्री फारुख अब्दुल्ला ने तो धमकी भरे अंदाज में हिन्दू-मुस्लिम दंगे हो जाने की भी संभावना जता दी थी। उन्होंने कहा था कि 'संसद पर हमले के दोषी मोहम्मद अफजल को यदि फांसी दी गयी तो देश में आग लग जाएगी, साम्प्रदायिक सौहार्द नष्ट हो जाएगा, फांसी की सजा सुनाने वाले जज की हत्या भी हो सकती है।'

अफजल जैसे देशद्रोही के प्रति हाफिज सईद या अजहर मसूद या यासीन मालिक जैसे भारत विरोधियों की सहानभूति तो समझ में आती है पर जब भारत के ही बुद्धिजीवी व राजनेता देश में आस्था न रखने वाले अफजल का अप्रत्यक्ष समर्थन करेंगे तो क्या उनकी निष्ठाऐं व आस्थायें भारत के प्रति संदिग्ध नहीं हो जायेगी। वे उन प्रदर्शनकारियों के पक्ष में क्यों खड़े हो जाते है जो 'भारत की बर्बादी तक जंग जारी' रखने के नारे लगाते है जैसा कि जे.एन.यू. में हुआ। जब देश के नागरिक अपने ही देश के साथ शत्रु के समान व्यवहार करने वालों का समर्थन करने लगेंगे तो उनकी देश के प्रति आस्थाओं पर प्रश्नचिह्न क्यों नहीं लगना चाहिये?

यहां यह कहना भी गलत नहीं होगा कि लोकतंत्र में नागरिकों के मताधिकारों की शक्ति के सामने सत्ता के लोभी राजनेताओं की निष्ठायें डगमगाने के कारण देश को टुकड़े-टुकड़े करने के नारे लगाने वाले देशद्रोहियों को कानून से बचने के लिए उनको कुत्सित राजनीति का सहारा मिल जाता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस तरह

शेष पृष्ठ 14 पर....

भारत अखण्ड होने की ओर अग्रसर -प्रेम

अखण्ड भारत मोर्चा के संस्थापक एवं पूर्व सांसद श्री बी.एल.शर्मा 'प्रेम सिंह शेर' के जन्मदिवस व अखण्ड भारत मोर्चा के स्थापना दिवस पर एक यज्ञ का आयोजन प्राचीन श्री हनुमान मन्दिर, शंकर विहार में किया गया। कार्यक्रम में मुख्यरुप से अखण्ड भारत मोर्चा के संरक्षक महंत यति नरसिंहान्द जी व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संदीप आहूजा व हिन्दू हेल्प लाईन के क्षेत्रिय संयोजक श्री दीपक कुमार उपस्थित थे। हवन के उपरांत अखण्ड भारत मोर्चा की राष्ट्रीय कार्यकारणी की बड़ी बैठक हुई जिसमें श्री प्रेम ने कहा कि जिस प्रकार पाकिस्तान के टुकड़े होने को तैयार है अब भारत शीघ्र ही अपने पुराने नक्शे अनुसार अखण्ड होने की ओर अग्रसर है। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संदीप आहूजा ने पश्चिम बंगाल मे हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचारों पर रोष व्यक्त करते हुऐ कहा कि ममता सरकार को शीघ्र बरखास्त किया जाना चाहिए क्योंकि ममता बेनर्जी की सरकार ही वहां बंगलादेशियों को संरक्षण दे रही है। यति नरसिंहान्द जी ने हिन्दुओं को घूर्त राजनैतिक नेताओं व पार्टियों से बच के रहने को कहा ओर सभी हिन्दू संगठनों को एकजुट होने का अह्वान किया।

सड़कों पर होने वाली नमाज पर अखण्ड भारत मोर्चा के छेड़े गये अन्दोलन को श्री बी.एल.शर्मा 'प्रेम' जी ने सराहना की। कार्यक्रम मे प्रमुख रुप से मध्य प्रदेश के संयोजक श्री संतोष संराठे, राजस्थान के शाखा प्रमुख श्री भीष्म शर्मा, उत्तर प्रदेश की संयोजिका श्रीमती चेतना शर्मा, दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष श्री भारत बत्रा, मोर्चा के उपाध्यक्ष श्री वीरेन्द्र जरयाल, महामंत्री श्री दीपक सिंह, मीडिया प्रमुख श्री प्रवेश चौधरी, मंत्री श्री भारतभूषण अलावादी, श्रीमती राजश्री आहूजा, श्री योगेश गोदिया, श्री पवन कौल, श्री शिवा ठाकुर आदि के अतिरिक्त हिन्दू जनजागृति समिती के श्री चारुदत्त पिंगलें, श्रीमती शिप्रा, जोधपुर संभाग के श्री श्रवण पंवार आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे।

श्री प्रेम को जन्मदिन की बधाई देने नवनियुक्त जिला अध्यक्ष श्री संतोष पाल, पूर्व निगम पार्षद श्रीमती नीमा भगत, पूर्व पार्षद श्री रवि शर्मा आदि गणमान्य लोग पहुंचे। ❑

.....पृष्ठ 13 का शेष

के राष्ट्र विरोधी आंदोलनों के पीछे विदेशी शक्तियों के साथ-साथ मज़हबी आतंकियों, अलगाववादी कश्मीरियों, वामपंथियों व नक्सलियों का बड़ा हाथ होता है?

देशद्रोही 'अफजल' तो दंड पा गया परन्तु जिहाद के लिए संकल्पित मानसिकता 'गुरु' को कौन मिटायेगा? क्या देश को तार तार करने के लिए देशद्रोही तत्व किसी न किसी बहाने को ढूंढ कर चुनौती देते रहेंगे? जबकि कानून और न्याय के आधार पर आतंकियों व अपराधियों को क्षमा नहीं किया जाता और इसके लिए प्रावधान है, ताकि भविष्य में अराजकता का वातावरण न बनें और सभी व्यवस्थाऐं सुव्यवस्थित रह सकें।

प्रेषक : **विनोद कुमार सर्वोदय**
गाजियाबाद

वह सुखी है, जिसने स्वार्थ भावना को पूर्णत: वश में कर लिया है। वह सुखी है, जिसने शान्ति प्राप्त की है। वह सुखी है जिसने सत्य को पहचाना है। -**श्रीमद्भगवत् गीता**

विश्व हिन्दू परिषद् के उपाध्यक्ष का 76 में वर्ष में प्रवेश

विश्व हिन्दू परिषद् केन्द्रीय समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्रीमान जगन्नाथजी शाही दिसम्बर 1, 2, 3/2016 गुजरात के प्रवास में आये दि.2 दिसम्बर वह अपनी आयु के 76 वर्ष पूर्णकर 77 में प्रवेश किया।

विश्व हिन्दू परिषद् केन्द्रीय समितिके वरिष्ट उपाध्यक्ष श्रीमान जगन्नाथजी शाही आंतर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष विहिप मा. डॉ. प्रवीणभाई तोगडिया जी

विश्व हिन्दू परिषद् के अंतर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. प्रवीणभाई तोगड़िया जी ने मा. शाही जी का कर्णावती कार्यालय में जन्मदिन की शुभेच्छा दी और उनका तिलक श्रीफल और शॉल देकर उनके दीर्घायु के लिए कामना करते हुए उनसे आशीर्वाद लिए। मा. शाहीजी समन्वय मंच आयाम बैठकों के क्रम में गुजरात प्रवास

आये हुए थे उसी दिन डॉ. प्रवीणभाई भी प्रवास से आये थे यह संयोग था। बधाई देने में और आशीर्वाद प्राप्त करने में क्षेत्रीय संगठनमंत्री श्री रोहितभाई, क्षेत्रीय धर्माचार्य संपर्क प्रमुख श्री रामरतनजी, उत्तर गुजरात प्रांत संगठन मंत्री श्री कामेंद्र सिंह जी, उत्तर गुजरात प्रांत सहसंगठन मंत्री श्री अमृतजी ठाकोर, उत्तर गुजरात समरसता के श्री रशेषभाई रावल, उत्तर गुजरात प्रांत के धर्मप्रसार के पूर्णकालीन श्री जगमोहनजी, कर्णावती महानगर मंत्री श्री राजुभाई पटेल, धर्मप्रसार के प्रांत उपाध्यक्ष श्री कृष्णपाल सिंह भदोरिया, उत्तर गुजरात के उपाध्यक्ष श्री राजुभाई ठाकर आदि उपस्थित थे।

प्रेषक : **रोहितभाई दरजी**
क्षेत्रीय संगठनमंत्री
विश्व हिन्दू परिषद्, गुजरात
मो. 9425412403

बजरंगदल ने राज्य सरकार का पुतला फूंका

जम्मू 21 दिसम्बर, गत दिवस भाजपा और पीडीपी की सांझा सरकार द्वारा यह निर्णय लिया गया कि आतंकी बुरहान वानी के भाई खालिद व अन्य देशविरोधी गतिविधियों में लिप्त कश्मीरियों को 4-4 लाख रूपए की अर्थिक सहायता देने की घोषणा की जिसके विरोध में बजरंगदल ने प्रेस कल्ब के बाहर राज्य सरकार का पुतला जलाकर रोष प्रकट किया। बजरंगियों को सम्बोधित करते हुए प्रान्त के सह संयोजक राकेश शर्मा ने कहा कि भारत-पाकिस्तान सीमा पर तैनात भारतीय सेना के जवान शहीद होते हैं, राज्य सरकार द्वारा उन्हें सम्मानित करना चाहिए न कि आतंकवाद में संलिप्त बुरहान वानी, खालिद वानी एवं अन्य कश्मीरी युवाओं को 4 लाख रूपए की सहायता राशि देना जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद को बढ़ावा देना है। इस अवसर पर विक्की चौधरी, कार्तिक सूधन, गोविंद, पवन, पालु, लव शर्मा आदि उपस्थित थे।

संकट के समय मित्रों से सलाह लेनी चाहिए।

-रामायण

तर्कहीन राजनीति का परिचय देते पक्ष और विपक्ष

-अजय जैन 'विकल्प'

राजनीति के समर में विकास का रथ तभी विजय का आचमन करता है, जब कृष्ण जैसा सारथी हो और सारथी की महत्ता को सिद्ध करने का पर्याय भी तभी है, जब रथ पर धनुर्धर अर्जुन सवार हो। वर्तमान राजनीति का रुख काँग्रेस के हवाले से देखा जाए तो, तानाशाही वाला हो सकता है, किन्तु कमजोर सारथी रूपी राहुल न तो खुद अर्जुन बन पाए, न ही संगठन को अर्जुन बनने दे रहे हैं।

विरोधाभास के गलियारे से शुरु हुई बहस 'भूचाल' या 'भूकंप' जैसे 'बच्चा बयान' पर जाकर थमेगी, समझ से परे है। बहरहाल, कांग्रेसी युवराज से पार्टी को उम्मीदें तो बड़ी हैं, पर लम्बे समय से वह दिवास्वप्न ही साबित हो रही हैं। राष्ट्र के हृदयस्थल संसद से चीखने वाले शब्द भी यही इशारा कर रहे हैं। पक्ष और विपक्ष दोनों की पटकथा का सार चाहे कुछ भी हो, पर भूमिका संसद के प्रति गरिमाहीनता का बोध कराती है, जो देशवासियों का मनोबल गिराने में नाटकीय कदम है।

संसद में बोलने और नहीं बोलने के नुकसान एवं फायदे काँग्रेस के युवराज राहुल गाँधी को तो समझ आए या नहीं, पर संगठन के पुराने सिपहसालारों को अंतिम दिन यह बात समझ में आ गई है। इतने पुराने संगठन को इससे सिर्फ और सिर्फ घाटा ही हुआ है। आश्चर्य होता है कि, भारत तो ठीक, विदेश में शिक्षित काँग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी यह कहते हैं कि 'मुझे संसद में बोलने नहीं दिया जा रहा है।' इसे सम्भवत: अनुभवहीनता और गहन सोच की कमी ही मानना पड़ेगी कि किसी प्रमुख विपक्षी दल के इतने चर्चित चेहरे की जुबान से ये बात निकली कैसे? अरे, क्या सत्ता के किसी नेता ने इनकी जुबान पकड़ ली थी, जो इन्हें बाहर आकर ऐसा बताना पड़ा। बड़ा अचरज होता है कि जिसे सोनिया गाँधी और पूरी काँग्रेस अपना खिवय्या माने बैठी है, वो सेनापति ही ये कहे कि 'मेरे पास प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के निजी भ्रष्टाचार के खिलाफ और नोटबन्दी में हुए भ्रष्टाचार के खिलाफ ठोस जानकारी है और मैं इसे लोकसभा में रखना चाहता हूं, लेकिन मुझे बोलने नहीं दिया जा रहा है।'

दरअसल लगता तो ऐसा है कि राहुल बाबा ने खुद को संसद से बचाया है, पर इससे जनता में गलत संदेश गया है। राहुल गाँधी और कई कांग्रेसी ऐसा चाहते थे कि न बोलने देने का आरोप सत्ता पर लगाकर आमजन का भरोसा हासिल किया जाए, पर ये दाँव उलटा पड़ गया है। इस राजनीति से सर्वाधिक फायदा सत्तारुढ़ भाजपा को ही मिला है। हंगामा मचाकर बहस के बाद मतदान की मांग से कांग्रेस को क्या मिला, केवल घाटा...। राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि काँग्रेस के युवराज को पूरी उम्मीद थी कि नोटबन्दी से उत्पन्न जनसमस्याओं को लेकर संसद ठप कराने से उसे मीडिया का ध्यान और जनता का समर्थन मिलेगा, पर ऐसा हो नहीं सका। इसकी वजह यह भी है कि, नोटबंदी के शुरुआती समय में आमजन कतार में रहे, उनका समय बर्बाद हुआ, लेकिन मोदी के खिलाफ कांग्रेस ताकतवर जनआंदोलन खड़ा करने में विपक्ष के नाते विफल रही। कांग्रेस के साथ ही टीएमसी, बीएसपी और शिवसेना को भी कोई सफलता नहीं मिली। हाँ, तब कांग्रेस ने कतार में खड़ी जनता को सरकार के खिलाफ भड़काने की कोशिश जरूर की, किन्तु निचले स्तर तक इस पर नेताओं ने सिर्फ आंदोलन का दिखावा किया। इससे नतीजा यह निकला कि काँग्रेस को जनता के ही सुर से सुर मिलाकर, यानि नोटबंदी को अघोषित तौर पर जन समर्थन में जायज मानना पड़ा। राजनीतिक समझ देखिए कि राहुल बाबा के इस 'बच्चा बयान' को समझकर पीएम ने सभाओं में मजमा लूटने में कोई कसर नहीं छोड़ी। ये अपने हिसाब से नोटबन्दी पर बोलकर कांग्रेस के शहजादे को कोसते रहे। इतना हो चुकने के बाद मतलब संसद के अंतिम बचे समय में कांग्रेसियों के पल्ले यह कहानी पड़ी कि हंगामा करने से फायदा नहीं, घाटा

हो गया है, इसलिए अपने फायदे की खातिर वह हंगामा रोकने पर सहमत हुई, पर तब तक देर हो चुकी थी। अब संसद चलने से काँग्रेस को उसका लाभ नहीं मिले, इस पर अंतिम मुहर भाजपा ने लगाई। काँग्रेस की देर का सत्तापक्ष यानि भाजपा ने पूरा लाभ लिया। अब अपने लाभ के लिए इन्होंने संसद नहीं चलने दी। हंगामेदार संसद में ही अपना फायदा देखकर सबने काँग्रेस को कोसा, जिससे आमजन ने भी विपक्ष को ही गलती में माना क्योंकि जनता के अन्य मुद्दों पर तो कोई बात हो ही नहीं सकी। अंतिम दिन भी विपक्ष के रुप में कांग्रेस मोदी सरकार को घेरने में विफल रही और राष्ट्रपति से मिलने जाने में भी बिखराव हो गया। संसद में पहले कम बोलकर तथा अंतिम दिन पीएम ने इंदिरा गाँधी और 1971 में ही नोटबंदी कर देने की जो सलाह इतिहास के पन्नों से निकाली है, उससे काँग्रेस को आगे चलकर और भी घाटा होना पक्का है। तब नोटबंदी करने की अपेक्षा 'लेडी आयरन' द्वारा यह कहना कि- 'क्या काँग्रेस को चुनाव नहीं लड़ना है,' से पीएम नरेन्द्र मोदी ने आमजन को यकीन दिलाया है कि कालेधन को खत्म करने के लिए काँग्रेस ने कोई कड़ा कदम नहीं उठाया है। इधर पीएम नरेन्द्र मोदी की पटकथा भी कम रोचक नहीं है। इन पर भी गजब है कि बोले-'मुझे संसद में नहीं बोलने दिया जा रहा, इसलिए मैं अपनी बात रखने के लिए आमसभाओं का सहारा ले रहा हूं', जबकि नरेन्द्र मोदी संसद में बोलने और नहीं बोलने के फायदे अच्छे तरह से जानते हैं। राहुल गांधी संसद में अपने विशेषाधिकार का फायदा उठाकर मोदी पर कोई बड़ा आरोप लगाना चाहते थे, ये सिर्फ हवाई किला था, क्योंकि सबूत ही नहीं है। अगर सबूत होता, तो यह सार्वजनिक तौर पर आरोपों का खुलासा करते, जैसा कि नहीं हुआ और इसके बाद भी इन्होंने खुलासा तो किया ही नहीं न। इससे तो संगठन के बड़े नेता भी चकित हैं, कि इनको कौन-सा सबूत और कहाँ से मिल गया। यह मानने में भी कोई बुराई नहीं है कि नियमों एवं संवैधानिक मुश्किलों से बचने के लिए ही पीएम नरेन्द्र मोदी ने नोटबन्दी पर विपक्ष के अनेक प्रश्नों का सामना नहीं किया। जरा सोचिए कि, क्या यह संभव है कि किसी राष्ट्र का प्रधानमंत्री उसी देश की संसद में बोलना चाहे और उसे जबरन रोक दिया जाए? यदि ऐसा होता तो, संसद के शीतकालीन सत्र के अंतिम दिन पीएम मोदी कैसे बोल लिए...?

दरअसल, दोनों दलों के प्रमुख ने ही जो सोचा था, उस पर भाजपा ने पूरा काम किया, लेकिन कांग्रेस हवाबाजी में ही रह गई। अलबत्ता भाजपा भी कोई महत्त्वपूर्ण झंडे गाड़ने में सफल नहीं हो सकी है या तो यह अपने राजनीतिक चरित्र से बेईमानी है, या व्यक्तिवाद के हावी होने से पतन की चेष्टा। इसी बात पर कुछ पंक्तियाँ याद आती है -

चले थे राह के कंकर हटाने 'अवि' ,
समय-संग खुद कंकर बने जा रहे लोग...

अब देखना यह है कि, राजनीतिक विद्वानों की विद्वता का यह ऊँट किस करवट बैठकर बुद्धिहीन राजनीति से राष्ट्र को बचाता है।

चीफ रिपोर्टर-स्वदेश समाचार पत्र, इंदौर
एम.जी.रोड, इंदौर (मध्यप्रदेश)
Email-ajayjainvikalp@gmail.com
09770067300

अमृत-वचन

अप्यदृष्टं श्रुतादेव पुरुषं धर्मचारिणम्।
भूमिकर्माणि कुर्वाणं तं जनाः कुर्वते प्रियम्।।

इस संसार में जो व्यक्ति धर्म का पालन करता हुआ परोपकार के कार्य में लगा रहता है। ऐसे व्यक्ति को भले ही लोग देखें भी नहीं अपितु उसके विषय में सुनने मात्र से उससे प्रेम करते हैं अर्थात् परोपकारी व्यक्ति का कार्य ही उसके प्रति प्रेम का कारण होता है।

सांस्कृतिक अवमूल्यन

वर्तमान भारत में अधिकांश भारतीयों को इस बात का अफसोस रहता है कि भारतीयों की वृहद सांस्कृतिक विरासत का दिन-ब-दिन अवमूल्यन होता जा रहा है सोशल मीडिया के इस दौर में हम लोग डिजिटल रिश्तों को जी रहे है व वास्तविक रिश्तों मे 'खोखलापन' उभर कर सामने आ रहा है परन्तु यदि हम इस पूरे परिदृश्य पर एक गंभीर दृष्टि डाले तो हम यह समझ पायेगें की इस पूरे 'रंगमंच' में हमारे जैसे कई किरदार अपनी भूमिका का निर्वाहन पूरी गंभीरता से नहीं कर रहे है तात्पर्य यह है कि यह अवमूल्यन यकायक नही हुआ है समय के साथ शनैः शनैः हमने अपने सांस्कृतिक आधार को छोड़ा है जिसके जिम्मेदार हम सभी है। आज के दौर में समयाभाव के चलते व जीजिविषा के अभाव में हम लोग शॉर्टकट अपनाने लगे है जिसके कारण घर जाकर मिलने के स्थान पर फोन व फोन के स्थान पर एक कॉमन व्हाट्स अप, फेसबुक मैसेज के माध्यम से शुभकामनाओं की रैली चल पढ़ी है जो एक मोबाइल से दूसरे मोबाइल तक होते हुए बहुतायत तक पहुँचती जा रही है यदि समय रहते इस बहाव को नही रोका गया तो (जो कि निकट भविष्य में सभंव भी नही दिखता) एक दिन जब हम पीछे मुड़कर देखगें तो पछतावे के सिवाय कोई विकल्प भी नहीं दिखेगा।

यदि हम इस सांस्कृतिक गिरावट को थामना चाहते है तो हमें स्वयं को सबसे पहले हमारी सांस्कृतिक परंपराओं का सही अनुपालन सुनिश्चित करना होगा जिसके लिए जरूरी है परिवार व पारिवारिक संस्कारों हेतु कुछ समय निकालना, जब हम स्वयं गंभीरता से हमारी सांस्कृतिक विचारधाराओं का सम्मान करेगे तो ऐसा करते हुए देखने पर शायद विडियो गेम्स मोबाइल, टी.वी व इन्टरनेट के मकडजाल में फँसी हमारी युवा पौध शायद थोडा उस जकड़न से बाहर निकलकर सांस्कृतिक मूल्यों को समझने लगे, हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि जिन परम्पराओं का हमारे बुजुर्गों ने पालन किया तथा हमें यहाँ पहुँचाया उन्हें हम भी उसी जिम्मेदारी से उसके मूल रूप में हमारी आने वाली पीढी तक पहुँचाए व उसका मूल्य भी उन्हें समझाये और यह तभी संभव होगा जब हम स्वयं पूरी जिम्मेदारी से उन परपराओं का पालन करे तथा उनके क्रियान्वयन हेतु वास्तविक व सार्थक प्रयास करे, क्योंकि बोले हुए शब्दों से ज्यादा असर वास्तविक घटनाओं का होता है, जब हम स्वयं हमारे बड़ो को यथोचित सम्मान व समय देगें तो उसे देखकर हमारे युवा भी भविष्य में ऐसा करने के लिए प्रेरित होंगे।

प्रेषक : **हरीश शर्मा**
मो. 9755025567
harsh.16060@gmail.com
harsh.16060@hotmail.com

गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्र. नितिन आर्य को स्वर्ण

गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्र. नितिन को शास्त्री परीक्षा में सर्वाधिक अंक 80 प्रतिशत प्राप्त किये जाने पर उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय के कुलाधिपति महामहिम राज्यपाल श्री कृष्णकान्त पाल ने स्वर्ण पदक देकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर गुरुकुल प्रभात आश्रम में स्वागत सभा का आयोजन किया गया। पूज्य स्वामी जी महाराज ने उनको उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए आशीर्वाद दिया और जीवन में आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी।

अभी नहीं तो कभी नहीं समय बहता जा रहा है, युद्ध ही कल्याण

भगवान श्रीकृष्ण ने शिशुपाल को कहा था 99 गलतियो माफ आगे 1 भी गलती करोगे तो शीरच्छेद होगा।

1947, 14 अगस्त रात्रि 12 बजे से पाकिस्तान, 2016 दिसम्बर पर्यन्त भारत को नोंच रहा है। सोचते रहोगे तो कुछ नहीं होगा ऐसा सबक सिखाओ की भारत की तरफ आँख उठाकर देखने के काबिल पाकिस्तान न रहे तब और तब भारत चैन से रह सकता है।

विभाजन के बाद तुरंत 3 दिन हमला करके कश्मीर का एक हिस्सा ले लिया जो आज पाक अधिकृत कश्मीर कहलाता है चवा पाकिस्तान उसको आजाद कश्मीर कहता है। कई वर्ग किमी जमीन चली गई, 50 साल में कश्मीर वेली हिन्दू विहीन हो गई कश्मीर के 3 लाख पंडितों को अपने घर छोड़कर भागना पड़ा हम 100 करोड़ अभी तक उनको फिर से कश्मीर में बसा नहीं पाए न तो देश में उनको सम्मानजनक जीने की व्यवस्था कर पाये वह अपने ही देश में विस्थापित है। स्वर्ग भगवान विहीन हो गया 370 की धारा अभी तक मौजूद है। उसके दुष्परिणाम हम भोग रहे है। तत्काल 370 हटाओ जम्मू-कश्मीर बचाओ, देश बचाओ।

कश्मीर, जम्मू , लदाख तीन अलग राज्य घोषित करो और कश्मीरी पंडितों को पुन: वैली में बसावो।

65 में युद्ध हुआ युद्ध विराम के बाद ताश्कंद करार, देश के प्रधानमंत्री हत्या और जीता हुआ भू-भाग वापस किया, हजारों सैनिक और करोड़ों का व्यय हुआ। 71 में पूर्व पाकिस्तान को आजाद कराने भारतीय सैन्य ने अपनी बहादुरी बताई और लड़े 90 हजार पाकिस्तानी सैनिक बंदी बनाये, बदले में आज हम बंगला देश से मुंहकी खा रहे है, 3 करोड़ से ज्यादा बांग्लादेशी भारत में अवैध रह रहे है और गौ तस्करी से हजारों गाये बांग्लादेश जा रही है बांग्लादेश हमारे लिये अब सिर दर्द बना है।

पाकिस्तान, बांग्लादेश दोनों में हिन्दू सभ्यता आबादी अब ऊँगली में गिन सके उतनी ही बची है, वह भी गुलामी की जिंदगी जी रहे है। अपनी स्थिति करभला से तो पकड़ गला जैसी हो गई है। 18 दिन कारगील का युद्ध भी हमने अपने ही देश में घुसे दुश्मनों को भगाया, कारगील विजय दिवस मना रहे है, तो अब पाकिस्तान विजय दिवस की तैयारी करो और बांग्लादेश को हजम करो। पाकिस्तान के टुकड़े होने की झूठी आस से क्या मिलेगा? विष का सागर और विष की एक बूंद दोनों विष है, उतना ही खतरनाक है। ब्रेड और उसका एक टुकड़ा दोनों में वही गुण धर्म है ऐसा नहीं है तो विज्ञान झूठा साबित होगा, पाकिस्तान के टुकड़े नही पाकिस्तान विजय दिवस की तैयारी करो। विश्व गुरु बनने की कल्पना करने वालों हमें अपने पूर्वजों का जम्बूद्वीप अर्थात् 1 करोड़ स्केर किलोमीटर, आज के 25 देश हमारे है विश्व गुरु बनने के लिये पूरा विष का सागर पीने की तैयारी करो।

पारसी 1000 वर्ष पहले भारत आये वो बात गलत है 712 में मुस्लिम आक्रमण हुआ, तब ईरान भारत का हिस्सा था, पहले ईरान के पारसी मायग्रेट हुए वो पा ऋषि है हम पुरे ऋषि है, अब दोनों मायग्रेट होकर कहा जायेंगे, उठो शिव बनकर हलाहल विष पीने को तडपो और तब विश्व शांति होगी। पाकिस्तान को हजम करो या ख़त्म करो और कोई विकल्प नहीं संकल्प करो।

1947 से आजतक कितने बी.एस.एफ.और कितने सैनिक मरे (1) कितने नागरिक मरे (2) कितने गाँव उजड़े (3) अब तक कितना खर्च हुआ।

हमने गवाया 1. कश्मीर का हिस्सा जो पाक अधिकृत कश्मीर चवा कहलाया 2. कश्मीर के पंडित वैली छोडने को मजबूर हुए 3. स्वर्ग नर्क में तबदील हुआ अब बहुत हुआ आओ पाकिस्तान विजय दिवस का महूरत निकाले।

'तेरा वैभव अमर रहे माँ हम दीन चार रहे ना रहे'

प्रेषक : **रोहितभाई दरजी**
क्षेत्रीय संगठनमंत्री
विश्व हिन्दू परिषद्, गुजरात
मो. 9425412403

संसार में रहो, परन्तु सांसारिक मत बनो (अर्थात् संसार में मोह मत रखो)

-श्री रामकृष्ण

बजरंगियों ने फूंका डॉ. फारूक अब्दुल्ला का पुतला

नैशनल कांफ्रैंस के चेयरमैन एवं पूर्व मुख्यमंत्री डा. फारूक अब्दुल्ला द्वारा दिए गये ब्यान की हुर्यित कांफ्रैंस व अन्य अलगाववादी संगठन कश्मीर हित के लिए लड़ रहे आंदोलन का नैशनल कांफ्रैंस समर्थन करती है एवं भारत सरकार को चेतावनी देती है कि कश्मीर में तैनात सुरक्षाबलों का तुरंत हटाया जाये नहीं तो एन.सी., हुर्यित कांफ्रेंस व अन्य से मिलकर उग्र आंदोलन करेगी। फारूक अब्दुल्ला ने कहा कि पाक अधिकृत कश्मीर भारत का हिस्सा नहीं है। बजरंगदल की प्रान्त टोली ने डॉ. फारूक अब्दुल्ला के दिए गये बयानों का खंडन करते हुए कहा कि डॉ. फारूक अब्दुल्ला व कश्मीर स्थित लंगेट विधानसभा के विधायक ईंजीनियर रशीद व अन्य कश्मीरी सांसदों व विधायकों द्वारा बार-बार देशविरोधी वक्तव्य दिए जाते हैं। भारतीय सेनाओं के बारे में उल्टी-सीधी बयानबाजी की जाती है जिसका बजरंगदल कड़ा विरोध करता है। बजरंगदल के प्रान्त सह संयोजक राकेश शर्मा के नेतृत्व में बजरंगियों ने रैजिडैंसी रोड स्थित एन.सी कार्यालय शेरे कश्मीर भवन के बाहर डा. फारूक अब्दुल्ला के पुतले का दाह संस्कार किया एवं कार्यालय में घुसने प्रयास किया परन्तु जम्मू-कश्मीर पुलिस ने बजरंगियों का कार्यालय में घुसने नहीं दिया। बजरंगियों को सम्बोधित करते हुए राकेश शर्मा ने कहा कि जब भी चुनाव में खड़ा होना होता है तो कश्मीरी नेता भारत सरकार द्वारा निर्धारित चुनाव आयोग के पर्चे को बरते हुए लिखते हैं कि हम भारतवासी हैं और भारत के संविधान के आधीन रह कर कार्य करेंगे परन्तु जब वह लोग कारपोरेटर, विधायक या एम.पी. बनते हैं तो खुलकर भारत के विरोध में वक्तव्य देते हैं और भारतीय सेना के मनोबल को डिगाते हैं। कश्मीर के एम.एल.ए हास्टल में बीफ पार्टी का आयोजन करते हैं।

बजरंगदल यह मांग करता है कि ऐसे देशविरोधी सांसदों, विधायकों एवं पार्षदों पर देश द्रोह का मुकद्दमा चलाकर उन्हें कड़ी सजा देनी चाहिए। इस अवसर पर करण, आस्तिक कोहली, अरूण कुमार, पवन कुमार, पालु, विक्की चौधरी अन्य अनेक बजरंगी उपस्थित थे।

प्रेषक : **राजेश भसीन, जम्मू**

आतंकियों को मंजूर नहीं हिंदुओं को बचाने वाला बिल

लाहौर। पाकिस्तान के सिंध प्रांत में अल्पसंख्यकों खासकर हिंदुओं के धार्मिक अधिकारों की रक्षा करने वाले विधेयक का आतंकी हाफिज सईद ने विरोध किया है। प्रांतीय विधानसभा द्वारा हाल में पारित जबरन धर्मांतरण रोकथाम विधेयक को उसने गैर इस्लामी और संविधान के खिलाफ बताया है। मुंबई हमलों के गुनहगार और जमात-उद-दावा के सरगना ने प्रांत के हिंदुओं की देशभक्ति पर भी सवाल उठाए हैं। उसने कहा कि भारत सिंध में रहने वाले हिंदुओं को पाक के खिलाफ इस्तेमाल करने की कोशिश में रहता है। 'सिंध आपराधिक कानून (अल्पसंख्यक सुरक्षा) 2015' में जबरन धर्मांतरण के षडयंत्रकारियों के लिए पांच और मददगारों के लिए तीन साल की सजा का प्रावधान किया गया है। विधेयक वयस्कों को धर्मांतरण के अपने फैसले पर पुनर्विचार के लिए 21 दिनों का समय भी देता है। हाफिज ने कहा कि यह कानून इस्लाम और पाक संविधान के विरुद्ध है। इस्लाम विरोधी कानून को लेकर हम खामोश नहीं रहेंगे। देशव्यापी आंदोलन से सिंध सरकार को इस कानून को वापस लेने के लिए मजबूर करेंगे। इसमें दूसरे राजनीतिक और धार्मिक संगठनों का भी साथ लिया जाएगा। गौरतलब है कि 'साउथ एशिया पार्टनरशिप-पाकिस्तान (सैप-पीके) की रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान में हर साल करीब 1,000 लड़कियों का जबरन धर्मांतरण किया जाता है, इनमें अधिकांश हिंदू लड़कियां होती हैं। पाकिस्तानी सीनेट की धार्मिक मामलों की स्थायी समिति भी जबरन धर्मांतरण को गैर कानूनी और इस्लाम के सिद्धांतों के खिलाफ बता चुकी है।

-दै0जागरण

सांप्रदायिक निर्णय के बाद भी कांग्रेस सेक्युलर!

-लोकेन्द्र सिंह

जुमे की नमाज के लिए मुस्लिम कर्मचारियों को 90 मिनट का अवकाश देकर उत्तराखंड सरकार ने सिद्ध कर दिया है कि कांग्रेस ने सेक्युलरिज्म का लबादा भर ओढ़ रखा है, असल में उससे बढ़ा सांप्रदायिक दल कोई और नहीं है। कांग्रेस के साथ-साथ उन तमाम बुद्धिजीवियों और सामाजिक संगठनों के सेक्युलरिज्म की पोलपट्टी भी खुल गई है, जो भारतीय जनता पार्टी या किसी हिन्दूवादी संगठन के किसी नेता की 'कोरी बयानबाजी' से आहत होकर 'भारत में सेक्युलरिज्म पर खतरे' का ढोल पीटने लगते हैं, लेकिन यहाँ राज्य सरकार के निर्णय पर अजीब खामोशी पसरी हुई है। उत्तराखंड की कांग्रेस सरकार के घोर सांप्रदायिक निर्णय के खिलाफ तथाकथित प्रगतिशील और बुद्धिजीवी समूहों से कोई आपत्ति नहीं आई है। सोचिए, यदि किसी भाजपा शासित राज्य में निर्णय हुआ होता कि सोमवार को भगवान शिव पर जल चढ़ाने के लिए हिन्दू कर्मचारियों-अधिकारियों को 90 मिनट का अवकाश दिया जाएगा, तब देश में किस प्रकार का वातावरण बनाया जाता? सेक्युलरिज्म के नाम पर यह दोगलापन पहली बार उजागर नहीं हुआ है। यह विडम्बना है कि वर्षों से इस देश में वोटबैंक की राजनीति के कारण समाज को बाँटने का काम कांग्रेस और उसके प्रगतिशील साथियों ने किया है, लेकिन सांप्रदायिक दल होने की बदनामी समान नागरिक संहिता की माँग करने वाली भारतीय जनता पार्टी के खाते में जबरन डाल दी गई है।

सांप्रदायिकता और सेक्युलरिज्म की परिभाषा तय करने के लिए आज देश में एक व्यापक बहस कराने की जरूरत है। आखिर सेक्युलरिज्म के मापदण्ड क्या हैं? कैसे तय होगा कि कौन सांप्रदायिक है और कौन नहीं? एक तरफ वर्षों से विशेष वर्ग के तुष्टीकरण की राजनीति को पाल-पोष रहे तमाम राजनीतिक दल, सामाजिक संगठन और बुद्धिजीवी सेक्युलर कहलाते हैं। वहीं, एक देश-एक नीति की बात करने वाले राजनीतिक दल, सामाजिक संगठन और बुद्धिजीवी सांप्रदायिक कहलाते हैं? यह किस प्रकार संभव है? किसी भी सामान्य बुद्धि के व्यक्ति के लिए यह समझना मुश्किल है कि धर्म के आधार पर विशेष संप्रदाय को लाभ पहुँचाना कैसे सेक्युलर कार्य हो सकता है? यह भारतीय समाज के लिए बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है कि कांग्रेस और उसके प्रगतिशील साथी प्रारंभ से ही सेक्युलरिज्म और सांप्रदायिकता की मनमाफिक परिभाषाएं गढ़कर बड़ी चालाकी से अपनी राजनीतिक दुकान चलाने के लिए समाज को धार्मिक आधार पर बाँटते रहे हैं। कांग्रेस की इसी तुष्टीकरण की नीति से समाज और देश की एकता-अखंडता को गहरी चोट पहुँची है। धर्म को लेकर समाज में आज जिस प्रकार का वातावरण बन गया है, उसके लिए सीधे तौर पर कांग्रेस और उसके प्रगतिशील साथी जिम्मेदार हैं। एक वर्ग के तुष्टीकरण और बहुसंख्यक समाज की उपेक्षा की नीति से सामाजिक ताने-बाने को गहरी क्षति पहुँची है। अपनी सहिष्णुता के लिए विश्वविख्यात हिन्दू समाज अब अनेक अवसर पर प्रतिक्रिया जाहिर कर देता है, क्यों? मुस्लिम समाज अपने आप को देश का सामान्य नागरिक मानने के लिए तैयार नहीं है, क्यों? वह सब जगह अपने लिए सहूलियतें माँग रहा है, क्यों? यदि हम इन प्रश्नों का उत्तर ईमानदारी से तलाशेंगे, तब हमें ज्ञात होगा कि आखिर देश की सेक्युलर छवि को किसने सबसे अधिक नुकसान पहुँचाया है? समाज में विभाजनकारी सोच को बढ़ावा किसने दिया? समाज में असहिष्णुता के बीज किसने बोए?

कांग्रेस ने उत्तराखंड और उत्तरप्रदेश के चुनावों को ध्यान में रखकर आजमाया हुआ कार्ड खेला है। जुमे की नमाज के लिए 90 मिनट का अवकाश देकर कांग्रेस की नजर मुसलमानों के 14 फीसदी वोटबैंक पर है। कांग्रेस वर्षों से इसी प्रकार मुसलमानों को लुभाकर अपने राजनीतिक हित साधती रही है। लेकिन, अब मुसलमानों को सोचना चाहिए कि वह इस प्रकार की लॉलीपॉप से कब तक

अपना दिल बहलाएंगे? सरकार के इस निर्णय से उनकी भी कम बदनामी नहीं हो रही है। उन्हें भी संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है कि गैर जरूरी सुविधाओं के लालच में मुसलमान एक मुश्त वोट करता है। भाजपा की अपेक्षा मुस्लिम समाज को उत्तराखंड सरकार के इस निर्णय का विरोध करना चाहिए। मुसलमानों को सोचना चाहिए कि आखिर उत्तराखंड सरकार के इस निर्णय से उनके जीवनस्तर में क्या परिवर्तन आएगा? मुस्लिम समाज के उत्थान की नीति बनाने की बात उन्हें करनी चाहिए। नमाज अदा करने के लिए उन्हें कार्यालय से अवकाश वास्तव में चाहिए क्या? जब एक नमाजी मुस्लिम चलती ट्रेन में तय समय पर अपनी नमाज अदा कर सकता है, तब कार्यालय में उसे क्या दिक्कत है? इसलिए उत्तराखंड सरकार का यह निर्णय मुसलमानों को मूर्ख बनाने के अलावा कुछ नहीं है। कांग्रेस ने सदैव से मुसलमानों को बरगलाने का ही काम किया है। अब यह निर्णय मुसलमानों को ही करना है कि उन्हें मुख्यधारा में आना है या फिर ऐसे ही तुष्टीकरण से काम चलाना है।

बहरहाल, उत्तराखंड की कांग्रेस सरकार के इस निर्णय से बहुसंख्यक समाज में असंतोष फैल सकता है। भाजपा नेता नलिन कोहली ने सच ही कहा है कि इस तरह तो हिन्दू कर्मचारी भी सोमवार को शिव पूजा और मंगलवार को हनुमान पूजा के लिए अवकाश की माँग कर सकते हैं। सिख पंथ भी गुरुद्वारे में अरदास के लिए अवकाश माँग सकता है। अल्पसंख्यक जैन समुदाय को भी प्रार्थना के लिए समय चाहिए। सोमवार और मंगलवार ही क्यों, हिन्दुओं को बुधवार को गणेश, गुरुवार को बृहस्पति भगवान, शुक्रवार को संतोषी माता, शनिवार को शनिदेव की अर्चना के लिए अवकाश चाहिए होगा। जुमे की नमाज के लिए 90 मिनट के अवकाश से प्रेरित होकर यदि अन्य पंथ के लोगों ने अवकाश की माँग शुरू कर दी, तब कांग्रेस सरकार क्या करेगी? सरकारी कर्मचारियों को धार्मिक मान्यताओं के निर्वहन के लिए इस प्रकार की सुविधा देना निहायत सांप्रदायिक और गैर जरूरी निर्णय है। समाज और देश हित में उत्तराखंड सरकार को इस अतार्किक फैसले को तुरंत वापस लेना चाहिए।

(लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में कार्यरत हैं)

सेवा कार्य

भगिनि निवेदिता सेवा न्यास द्वारा पाकिस्तान से आये हिन्दू परिवारों की देख-रेख वर्ष 2011 से की जा रही है। न्यास ने समाजसेविओं व दानकर्ताओं के सहयोग से उनकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करते आ रहा है। पिछले 27 नवम्बर 2016 को मजनू का टीला, गुरुद्वारा के पास यमुना किनारे बसे कैंप में भीषण आगजनी के कारण 26 झुग्गियाँ पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त हो गई। झुग्गियों में रखा सभी सामान जल कर राख हो गया।

न्यास ने उनके पुनर्वास के लिए पुनः सभी मूलभूत सामग्री जैसे राशन, कपड़े, बिस्तर, बर्तन, रजाई-कम्बल, गैस चूल्हा, आदि उन्हें उपलब्ध कराया तथा उनके लिए पुनः झुग्गियों के निर्माण में जुटी हुई है साथ ही सोने के लिए चारपाई की भी व्यवस्था न्यास द्वारा जल्द ही की जाने के लिए न्यास के अधिकारी प्रयासरत हैं। 80 वर्षीय श्री महावीर प्रसाद गुप्ता जी, जो न्यास के महामंत्री हैं पाकिस्तान से आये पीड़ित हिन्दुओं के दर्द से ऐसे परेशान हो जाते हैं मानो उनके शरीर के किसी अंग में पीड़ा हो रही हो और उनके कष्ट को दूर करने का हर संभव प्रयास करते हैं।

बांध पानी से टूट जाता है; उसी प्रकार दी हुई सलाह गुप्त न रखने से नष्ट हो जाती है। दोस्ती चुगली के कारण टूट जाती है, तो कायर डरने धमकाने से ही भगाया जा सकता है। -**पंचतंत्र**

बजरंगदल ने मनाया शौर्य दिवस

बजरंगदल द्वारा देशभर में मनाए जा रहे "शौर्य दिवस" के अंतर्गत जम्मू कश्मीर प्रान्त में भी शौर्य दिवस का कार्यक्रम मनाया गया। इस अवसर पर वक्ताओं ने बजरंगियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि बाबर के वजीर मीर बांकी द्वारा उत्तर प्रदेश में अयोध्या स्थित श्रीराम मंदिर को ढहा कर बाबरी ढाँचे का निर्माण करवाया था। 6 दिसम्बर 1992 को सम्पूर्ण हिन्दू समाज ने अपने बाहुबल पर विवादित बाबरी ढाँचे को गिरा दिया था। अपने सम्बोधन में वक्ताओं ने कहा कि बजरंगदल सेवा, सुरक्षा, संस्कार के आधार पर काम करता है। साधू, सन्त, महात्माओं की सुरक्षा, मंदिर-मठों की रक्षा, धर्मांतरण, घुसपैठ, लव जैहाद, गौहत्या आदि बुराईयों को खत्म करना ही बजरंगदल का उद्देश्य है। जय श्रीराम के जयघोष लगाते हुए बजरंगियों ने श्री हनुमान चालीसा का पाठ कर अयोध्या स्थित श्रीरामजन्मभूमि पर भव्य श्रीराम मंदिर निर्माण का संकल्प दोहराया। इस अवसर पर बजरंगदल के कार्यकर्ताओं ने विश्व हिन्दू परिषद प्रान्त कार्यालय शक्ति आश्रम से मोटरसाईकिल-स्कूटर रैली निकाली जो पुराने शहर से होती हुई श्रीरणवीरेश्वर मंदिर प्रांगण में सम्पन्न हुई। इस रैली का विभिन्न स्थानों पर स्थानीय लोगों द्वारा स्वागत किया गया।

इस अवसर पर विहिप प्रान्त संरक्षक डॉ. रमाकान्त दूबे, प्रान्त अध्यक्ष लीलाकरण शर्मा, प्रान्त कार्याध्यक्ष सुरेश चन्द्र, प्रान्त मंत्री शक्ति दत्त शर्मा, मातृशक्ति/दुर्गावाहिनी की बहनें, बजरंगदल प्रान्त सह संयोजक राकेश शर्मा, कार्तिक सूदन, गुलशन, कर्ण गुप्ता, पवन, मलंग, अश्वनी, रजत, अर्जुन, निखिल, पालु, मोहताज शर्मा व अन्य अनेक बजरंगी उपस्थित थे।

प्रेस सचिव

योग यूनेस्को की प्रतिष्ठित सांस्कृतिक धरोहर की लिस्ट में शामिल हुआ

यूनेस्को। योग भारत की प्राचीनतम विधा है। हाल के दिनों में योग को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खूब पसंद किया जा रहा है। भारत सरकार की पहल पर पूरी दुनिया 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस भी मना चुकी है। अब इसे संयुक्त राष्ट्र की अनुषंगी इकाई यूनेस्को ने सांस्कृतिक धरोहरों की सूची में शामिल कर लिया है। संयुक्त राष्ट्र के शैक्षणिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन यूनेस्को की इस सूची में योग के शामिल होने का ऐलान संगठन में भारत की प्रतिनिधि रुचिरा कांबोज ने किया। अदीस अबाबा में यूनेस्को की इंटरगवर्नमेंटल कमेटी की मीटिंग में यह फैसला लिया गया। बैठक में तुर्की, क्यूबा, अफगानिस्तान, कोरिया और फिलिस्तीन समेत सभी 24 सदस्यों ने योग को सांस्कृतिक धरोहर की सूची में शामिल करने पर अपनी सहमति दी। भारत की ओर से इसे सूची में शामिल कराने के लिए डॉजियर भेजा गया था। यूनेस्को के मुताबिक अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरों के दायरे में मौखिक परंपराओं और अभिव्यक्तियों, प्रदर्शन कला, सामाजिक रीति-रिवाज, उत्सव, ज्ञान आदि को रखा जाता है। चूंकि योग को खेल की विधा माना जाता था, इसलिए इसे इस लिस्ट में शामिल होने का मौका नहीं मिला था। -जनसत्ता

लोहड़ी, मकर संक्रान्ति व गुरु गोविन्द सिंह प्रकाश दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

ॐ

कृष्णा घी स्टोर

(शुद्ध देसी घी के विक्रेता)

बिहारी लाल सतीश कुमार बत्रा

(लायपुर वाले)

5229, बारा टूटी चौक, सदर थाना रोड, सदर बाजार, दिल्ली-110006

दूरभाष : 23611039

मोबाईल : 9811801010

कहां नहीं है धुंध, कोहरा, स्मॉग

-विनोद बब्बर

पौष माह (दिसम्बर-जनवरी) में देश के बहुत बड़े हिस्से में कोहरे के कोहराम के कारण जन-जीवन अस्त-व्यस्त रहता है। अति शीत के कारण लोग घर से बाहर नहीं निकल पाते वहीं सड़क से रेल और वायु मार्ग तक हर तरफ यातायात में व्यवधान उत्पन्न होता है। सड़क दुर्घटनाएं होती हैं तो रेल समय अनुशासन की गति खो देती हैं। ऐसा होना कोई असामान्य बात नहीं है लेकिन इस बार पर्यावरण से परिवेश तक एक नये तरह का कोहरा भी है जिसे निश्चित रूप से असामान्य नही कहा जायेगा।

विज्ञान की भाषा में वायुमंडल में उपस्थित जलवाष्प जब ओसांक से नीचे पर हिमांक से ऊपर रहती है तो पानी की छोटी-छोटी बूंदे वायुमंडल में देर तक लटकी रहती है। इस स्थिति में दृश्यता बहुत कम हो जाती है जिसे कोहरा कहते है। जबकि कोहरे और विभिन्न रसायनों के धुएं के मिश्रण को 'स्मॉग' कहते है जो अम्लीय प्रकृति होने के कारण बहुत हानिकारक होती है। लोक व्यवहार की मान्यता के अनुसार जब व्यवस्था में अकर्मण्यता की उपस्थिति एक सीमा से बढ़ जाती है लेकिन दिखावा बढ़ चढ़ कर होता है तो उसे भ्रष्टाचार कहते हैं। इसके कारण सामान्य जन पिछड़ा, गरीब और न्याय से वंचित रहता है। जबकि राजनीति में काले कारनामों और काले धन के मिश्रण को अराजक भ्रष्टाचार कहते हैं जो आत्मकेन्द्रित होने के कारण किसी भी देश और समाज के लिए आत्मघाती होता है।

इस बार का कोहरा विज्ञान ही नहीं लोक व्यवहार की परिभाषा की कसौटी पर खरा (?) उतरता है। सड़क से संसद तक, लोगों की जेब से दिल और बाजार तक छाये इस कोहरे ने देश में एक नये वातावरण को जन्म दिया है। काले धन और भ्रष्टाचार रूपी कोहरे पर काबू पाने की बातें दशकों से होती थी लेकिन वह सुरसा की तरह लगातार बढ़ता रहा। इसकी उत्पत्ति के अनेक कारणों में चुनावी राजनीति में धनबल के बढ़ते प्रभाव, टिकटों की खरीद फरोख्त, विदेशों से प्राप्त चंदा तथा कर व्यवस्था में अति जटिलता होना माना जाता है। समय-समय पर जो प्रयास किये गये वे राजनीति की भेंट चढ़ गये अथवा अधूरे मन से किये जाने के कारण बहुत प्रभावी नहीं रहे। लेकिन इस बार मोदी सरकार ने भ्रष्टाचार और कालेधन से जंग का शंखनाद करते हुए अचानक बड़े नोटों के बदलाव की जो घोषणा की उससे एकाएक बैंकिंग व्यवस्था पर आन पड़े दवाब के बीच जहां लाखों बैकिंग कर्मचारियों अधिकारियों ने कड़ी मेहनत कर स्थिति को सामान्य बनाने का प्रयास किया वहीं अनेक उच्चाधिकारियों ने काले को सफेद कर अव्यवस्था में ऐसी धुंध और कोहरा फैलाने का प्रयास किया जो प्रकृति की धुंध से ज्यादा हानिकारक है। एक ओर सामान्यजन लम्बी कतारों में लग कर दो हजार रुपये प्राप्त कर रहा था वहीं कुछ लोगों के पास हाल ही में जारी की गई करोड़ों रुपये की नई मुद्रा बरामद होना कोहरे (पारदर्शिता के अभाव) से अधिक 'स्मॉग' का प्रमाण है। इसने सरकार और व्यवस्था पर अनेक प्रश्नचिह्न लगाये।

शीतकालीन संसद सत्र का बिना कोई विधायी कामकाज के समाप्त हो जाना एक ऐसा कोहरा है जो लोकतंत्र और हमारे देश की छवि को धूमिल करता है। महामहिम राष्ट्रपति जी की सीख तक को अनदेखा कर संसद की कार्यवाही को बाधित करना दुर्भायपूर्ण है लेकिन देश के प्रधानमंत्री द्वारा 'संसद में बोलने से रोके जाने' के आरोप बहुत गंभीर है। तो दूसरी ओर विपक्ष भी इसी प्रकार के आरोप लगाकर वातावरण में धुंध बढ़ा रहे हैं। आखिर क्या कारण हे कि दोनों पक्ष बाहर तो खूब दहाड़ाते हैं जबकि संसद में संवाद कर संदेह का कोहरा दूर करने से बच रहते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया भी कोहरा बढ़ाने में अपनी ओर से महत्त्वपूर्ण योगदान कर रहा है। समाचार दिखाने की बजाय समाचार बनाने के लिए बाल की खाल खिंचना लगभग हर चैनल पर देखा जा सकता है। खास बात यह कि हर घटना को सभी चैनल अपने आकाओं के हितों के अनुसार प्रस्तुत कर अर्थ का अनर्थ करने में कोई कसर बाकी नहीं छोडते है। किसी अभिनेता के बेटे के नाम पर अंतहीन बहस करने के लिए उन्हें विशेषज्ञ मिल जाते हैं लेकिन भीषण सर्दी के बावजूद खुले में रात गुजारने के

लिए विवश लोगों अथवा ऐसी ही जनसमस्याओं पर सार्थक बहस के लिए स्थान और समय लगभग न के बराबर हैं। देश के कायदे कानून और बहुसंख्यक समाज की परम्पराओं का मजाक उड़ाना इनका प्रिय शगल होते हुए भी कोई इनका बाल बांका तक नहीं कर सकता क्योंकि इनके लिए विलाप करने वालों की हर जगह फौज तैयार रहती है।

रैनबसेरो की ही बात करें तो महानगरों की बात छोड़ दे तो शेष स्थानों पर न तो पर्याप्त रैन बसेरे हैं और हैं भी तो वहां पर्याप्त सुविधाओं का अभाव है। क्योंकि सड़क पर रात गुजारने वाले किसी नेता, सेठ अथवा अफसरशाह के संबंधी नहीं होते। जिनकी क्रयशक्ति इतनी कम होती है कि वे पेट की आग बुझाने के लिए अपना गाँव घर छोड़कर शहरों में पलायन को विवश हैं, उनके पास गर्म कपड़े, बिस्तर, किराये का कमरा खरीदने की सामर्थ न होना उनका दुर्भाग्य है या देश का, इस पर बहुत कोहरा छाया है लेकिन क्रिकेट तमाशे के लिए खिलाड़ियों की करोड़ों में बोली लगना और हर टीवी चैनल पर उन्हीं की चर्चा आर्थिक असमानता व मानवीय अवमूल्यन के कोहरे से अधिक स्मॉग है जो हम सबके लिए शर्मनाक है।

रोजी रोटी के लिए घर-गाँव छोड़ने की विवशता, कर्ज से परेशान किसानों द्वारा आत्महत्या, बाल मजदूरी, शोषण, पिछड़ापन जिस भारत की तस्वीर प्रस्तुत करते हैं उसकी चिंता हमारी व्यवस्था को केवल चुनावी मौसम में ही होती है वरना शेष दिन तो बड़े उद्योगपतियों, विदेशियों, अफसरशाहों, नेताओं के लिए ही लाल कालीन बिछाये जाते हैं। हमे चमकदार भारत नहीं, 'शाईन इण्डिया' चाहिए। जाने-माने स्कूलों में नर्सरी में दाखिले की होड़ है जहाँ लाखों रुपये डोनेशन देने वाले गिड़गिड़ा रहे है क्योंकि उन्हें अपनी अगली पीढ़ी को भारत भाग्य विधाता बनाना है। तो दूसरी ओर सरकारी स्कूलों में भीषण सर्दी का दौर समाप्त होने के बाद बच्चों को सर्दी से बचाव के लिए टोपी और स्कूल बस्ते के लिए भुगतान होगा। बेस्वाद 'मिड डे मील' पर लाख टिप्पणियों के बाद भी कोई परिवर्तन नहीं हो रहा क्योंकि यहाँ से तैयार होकर निकलने वाली पीढ़ी आम जनता बनाना है। वरना शासन किन पर होगा? भाषण पर तालियां कौन बजायेगा? एक दिन का राजा (मतदाता) शेष दिनों में भिक्षुक जैसा सम्मान भी नहीं पाता। उसे अपनी, अपने गाँव, कस्बे की समस्याओं का ऑनलाइन समाधान नहीं मिलता। बल्कि 'भारत भाग्य विधाताओं' के द्वार पर गुहार लगानी पड़ती है। वहां भी उसे आश्वासन ही मिलते हैं समाधान नहीं क्योंकि राजा को पांच वर्ष में केवल एक दिन के चुनने का अधिकार होता है। शेष दिनों के अशेष याचक को चुनने का अधिकार नहीं होता। निर्णय वे करते है जिन्होंने भय, भूख, बेकारी, बीमारी, अभाव, अशिक्षा अव्यवस्था का स्वाद चखना तो दूर उसे करीब से भी नहीं देखा। हमारी बुद्धि भी न जाने कितने धुंध और कोहरों से ढकी हुई है कि हम अज्ञानता, अपरिचय के हाई-वे पर व्यवस्था की गाड़ी दौडाने वालों से समाधान की उम्मीदे लगाते हैं।

यदि अगली पीढ़ी के मन में असमानता के बीज बोने वाली व्यवस्था को बदला नहीं जायेगा तो कैसे आगे बढ़ेगा देश? कैसे दूर होगा असमानता का कोढ़? गरीबी, बेकारी, अव्यवस्था की घुंध में पनपने वाले अपराधों, कुरीतियों, नक्सलवादों को रोकने की कोशिशें आखिर कैसे सफल होगी? एक-दूसरे पर दोषारोपण कर पक्ष-विपक्ष इसे धुंध-कोहरे से आखिर कब तक आँखें मूंदे रखेगा? यदि इस महत्त्वपूर्ण अवसर पर भी हमारे राजनेताओं ने आँखे नहीं खोली तो क्या अर्थ रहेगा संविधान में निहित कल्याणकारी लोकतांत्रिक व्यवस्था का।

हमारे कुछ भाईयों की दैनिक मजदूरी करोड़ों में होना अच्छी बात है लेकिन हमारे करोड़ों भाईयों की मजदूरी अपनी दैनिक जरूरतों यहाँ तक कि विपरीत मौसम से बचने के लिए भी अपर्याप्त होना शर्म की बात है। जीवन संघर्ष में यदि हमारे एक भाई के प्राण भी जाते है तो कलंक सम्पूर्ण राष्ट्र के माथे पर होता है। आखिर कब घटेगी असमानता की धूंध? इस घनी धुंध और कोहरे में यदि कोई सजगता से अपना कर्तव्य निभा रहा है है तो वे हैं सियाचीन जैसे ग्लेशियरों पर तैनात हमारे वीर जवान। उन्हें कोटिशः प्रणाम!

संपर्क- ए-2/9ए, हस्तसाल रोड,
उत्तम नगर नई दिल्ली-110059
09868211911, 7892170421
rashtrakinkar@gmail.com

वंदे मातरम् का गायक हूँ

-शिवसागर शर्मा

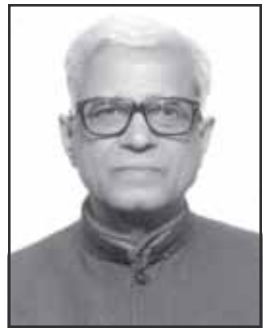

वंदे मातरम् का गायक हूँ,
जन-गण-मन का गान हूँ।
मुझको ही भारत कहते हैं,
मैं ही हिन्दुस्तान हूँ।।
हिन्दूकुश है पगड़ी मेरी
और हिमालय शीश है,
अण्डमान से लक्षद्वीप तक,
फैला हिन्द नदीश है।
अरुणाचल का सूर्योदय हूँ, नागा भूमि विशाल हूँ,
असम, मिजोरम, मणिपुर, मेघालय, त्रिपुरा, बंगाल हूँ।
पतित पावनी, चिर सुहागिनी, गंगा का वरदान हूँ,
मुझको ही भारत कहते हैं, मैं ही हिन्दुस्तान हूँ।।

मैं हूँ मध्यप्रदेश नर्मदा की पावन सौगात का,
हरियाणे का कुरुक्षेत्र हूँ, सोमनाथ गुजरात का।
मैं दिल्ली का लालकिला हूँ, अवध उत्तराखण्ड का,
सिन्धु नदी की घाटी वाला, मैं हूँ स्वप्न अखण्ड का।
तलवारों के पानी वाला, मैं ही राजस्थान हूँ,
मुझको ही भारत कहते हैं, मैं ही हिन्दुस्तान हूँ।।

दमण, द्वीव, चण्डीगढ़ मैं हूँ, नगर हवेली दादरा,
मैं अरविन्द घोष की नगरी, पाण्डिचेरी की हूँ गिरा।
मैं धरती पर जन्नत वाला, जम्मू और कश्मीर हूँ,
गुरुओं का पंजाब और गोआ का सागर तीर हूँ।
देवों की प्रिय भूमि हिमाचल की शीतल मुसकान हूँ,
मुझको ही भारत कहते हैं, मैं ही हिन्दुस्तान हूँ।।

मैं सिक्किम हूँ, महाराष्ट्र में वीर शिवा का वेश हूँ,
पावन भूमि उड़ीसा मैं हूँ, मैं ही आंध्र प्रदेश हूँ।
केरल में कथकली नृत्य हूँ, कर्नाटक संगीत हूँ,
तमिलनाडु में सुब्रह्मण्यम् भारती के गीत हूँ।
बोधगया हूँ मैं बिहार में, नालन्दा का ज्ञान हूँ,
मुझको कही भारत कहते हैं, मैं ही हिन्दुस्तान हूँ।।

59/121बी/2ए, अजीतनगर गेट,
खेरिया मोड़, आगरा-282001
मोबाईल-9456048555

❑

बांग्लादेश अब नहीं रहेगा इस्लामिक राष्ट्र

नई दिल्ली। बांग्लादेश सरकार इस्लाम को राष्ट्रीय धर्म की मान्यता खत्म करने की विचार कर रही है। बांग्लादेश सरकार के एक वरिष्ठमंत्री ने कहा है कि बांग्लादेश के नागरिकों ने धर्मनिरपेक्षीय मूल्यों को गले लगा लिया है। यहां पर अल्पसंख्यक जैसी कोई चीज नहीं है। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश के नागरिकों के अंदर ही धर्मनिरपेक्षता है।

एक अंग्रेजी अखबार के अनुसार, बांग्लादेश की सत्ताधारी पार्टी आवामी लीग पार्टी के वरिष्ठ नेता डॉ अब्दुर रज्जाक ने ढाका स्थित प्रेस क्लब में प्रस्ताव रखा कि बांग्लादेश को राष्ट्रीय धर्म के रूप में इस्लाम का नाम संविधान से हटा देना चाहिए। उनके प्रस्ताव को अगर मान लिया जाता है तो अब बांग्लादेश गैरइस्लामिक यानी धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बन जाएगा। उन्होंने मीडिया के लोगों से कहा कि बांग्लादेश एक धार्मिक भाईचारे वाला देश है। यहां हम सभी धर्म के लोगों के साथ रहते हैं और यहां इस्लाम को संविधान में राष्ट्रीय धर्म का दर्जा देने का कोई मतलब नहीं बनता। उन्होंने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा, मैं यह कई जगह पहले भी कह चुका हूं कि इस्लाम को संविधान में राष्ट्रीय धर्म का दिया गया दर्जा समाप्त कर दिया जाना चाहिए। हमारे देश में अल्पसंख्यक जैसी कोई चीज नहीं है। उन्होंने कहा कि वह मानते हैं कि इस्लाम को बांग्लादेश के संविधान में इस्लाम को राष्ट्रीय धर्म एक रणनीति के तहत रखा गया था लेकिन अब इसका समय के अनुसार कोई महत्त्व नहीं रह गया है। ध्यान रहे कि बांग्लादेश में सबसे ज्यादा इस्लाम धर्म के लोग रहते हैं। यहां इस्लाम को मानने करीब 15 करोड़ लोग रहते हैं जो कि भारत, पाकिस्तान और इंडोनेशिया के बाद दुनिया की सबसे बड़ी मुस्लिम आबादी है।

-हिन्दुस्थान

जो लालटेन लेकर अपनी पीठ पर रखकर चलते है, उनकी परछाईयाँ आगे ही पड़ती है।

-रविन्द्रनाथ ठाकुर